ज्ञानामृत

वर्ष 50, अंक 2, अगस्त, 2014 (मासिक),
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी
सातवीं पुण्यतिथि (25 अगस्त, 2014)

1.**मुम्बई (गामदेवी)**- सेवाकेन्द्र के स्वर्णजयन्ती समारोह का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.रमेश शाह, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, ब्र.कु.सन्तोष बहन, विडियोकॉन इन्डस्ट्रीज़ लि.के अध्यक्ष भाता वेनूगोपाल एन.धूत, पूर्व सांसद भाता वाई.पी.त्रिवेदी, महाराष्ट्र महिला आयोग अध्यक्षा बहन एस.शाह तथा अन्य। 2.**मोतिहारी (बिहार)**- केन्द्रीय कृषि मंत्री भाता राधा मोहन सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सीता बहन। 3.**इन्दौर (ओमशान्ति भवन)**- लोकसभा अध्यक्ष बहन सुमित्रा महाजन का शाल ओढ़ाकर अभिनंदन करते हुए ब्र.कु.अनिता बहन। 4.**गोहाटी**- आसाम के मुख्यमंत्री भाता तरुण गोगोई को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सविता बहन। साथ में हैं अन्य बहनें। 5.**नई दिल्ली (कुतुब विहार)**- केन्द्रीय कानून, न्याय, दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री भाता रविशंकर प्रसाद को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरोज बहन। साथ में हैं सांसद भाता प्रमोद वर्मा। 6.**हैदराबाद**- आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री भाता चंद्रबाबू नायडू का अभिनंदन करते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय भाई। 7.**रांची**- मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के स्मृति दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए झारखण्ड के ग्राम विकास मन्त्री भाता के.एन.त्रिपाठी, ब्र.कु.निर्मला बहन तथा अन्य। 8.**आणंद**- कृषि विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डॉ.ए.एम.शेख को सम्मान-पत्र देते हुए ब्र.कु.गीता बहन। साथ में हैं ब्र.कु.भगवती बहन।

सच्चा रक्षक कौन ?

मानव स्वभाव से ही स्वतन्त्रता प्रेमी है अत: वह जिस बात को बन्धन समझता है, उससे छूटने का प्रयत्न करता है। परन्तु 'रक्षा बन्धन' को बहनें और भाई, त्योहार अथवा उत्सव समझकर खुशी से मनाते हैं। यह एक न्यारा और प्यारा बन्धन है।

बन्धन दो प्रकार के होते हैं – एक तो ईश्वरीय और दूसरे सांसारिक अर्थात् कर्मों के बन्धन। ईश्वरीय बन्धन से मनुष्य को सुख मिलता है परन्तु दूसरे प्रकार के बन्धन से दुख की प्राप्ति होती है। रक्षा बन्धन ईश्वरीय बन्धन, आध्यात्मिक बन्धन अथवा धार्मिक बन्धन है। विचारवान मनुष्य ईश्वरीय बन्धन में तो बँधना चाहते हैं परन्तु माया के बन्धन से मुक्त होना चाहते हैं। ईश्वरीय बन्धन उन्हें अप्रिय नहीं लगता परन्तु आज लोगों ने रक्षा बन्धन को एक लौकिक रस्म ही बना दिया है। इसी कारण, यह भी बन्धन भासने लगा है। जैसे आध्यात्मिकता और धर्म-कर्म के क्षीण हो जाने के कारण संसार की वस्तुओं से अब सत् अथवा सार निकल गया है वैसे ही आध्यात्मिकता को निकाल देने से इस त्योहार से भी सत् अथवा सार निकल गया है वरना यह त्योहार बहुत ही महत्वपूर्ण और उच्च कोटि का है।

बहनें, भाइयों से किस प्रकार की रक्षा चाहती हैं?

भारत देश अपनी फिलासॉफ़ी (Philosophy) के लिए प्रसिद्ध है। आप देखेंगे कि इन त्योहारों के पीछे भी एक बहुत बड़ी फिलासॉफ़ी अथवा ज्ञान है। रक्षा बन्धन के गूढ़ रहस्य को समझने के लिए पहले यह जानने की आवश्यकता है कि मनुष्य की सब प्रकार की रक्षा कैसे और किस द्वारा हो सकती है और बहनें अपने भाइयों से किस प्रकार की रक्षा चाहती हैं?

विचार करने पर आप इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि प्रत्येक मनुष्य पाँच प्रकार की रक्षा चाहता है – 1)तन की रक्षा, 2) धर्म, सतीत्व अथवा पवित्रता की रक्षा, 3) काल के पंजे से रक्षा, 4) सांसारिक आपदाओं से रक्षा, 5)माया के बन्धनों से रक्षा। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या कोई मनुष्य इन पाँचों प्रकार

अमृत-सूची

- कर्मों का खाता - 2 *(सम्पादकीय)*..... 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के..8
- ईश्वरीय कारोबार में 10
- 'पत्र' संपादक के नाम 13
- भानुदास से भानुप्रकाश 14
- राखी का उपहार 15
- ईश्वरीय उत्तराधिकार 16
- दादी से मिला वरदान.....18
- मेरा प्यारा खुदा दोस्त.....19
- सुन्दर राखी *(कविता)* 20
- स्वराज्य से ही रामराज्य 21
- भगवान का साथ हर पल.....23
- दादी ने सिखाया अनुशासन ..24
- दिव्य गुणों.. *(कविता)* 24
- अलौकिक प्रेम की पालना....25
- श्रीकृष्ण जन्मोत्सव 26
- राजयोग बनाम 27
- सचित्र सेवा समाचार 28
- सार्वभौमिक बंधुत्व.....30
- सचित्र सेवा समाचार 32
- नहीं भूलेगा बाबा वो.....33
- विशेष सूचना.....34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414423949 hindigyanamrit@gmail.com

की रक्षा करने में समर्थ है भी?

सर्वप्रथम तन की रक्षा पर ही विचार कर लीजिए। तन की रक्षा के लिए मनुष्य अनेक कोशिशें करता है परन्तु फिर भी अन्त में उसे यही कहना पड़ता है कि जिसकी मौत आई हो उसे कोई नहीं बचा सकता अर्थात् ''भावी टालने से नहीं टलती।'' इस सिद्धांत की पुष्टि के लिए अनेक वास्तविक वृत्तान्त प्रसिद्ध हैं।

दूसरी प्रकार की रक्षा है धर्म की, सतीत्व की अथवा पवित्रता की रक्षा – कई लोगों का कहना है कि बाहरी आक्रमणकारियों के शासन काल में बहनें, भाइयों को इसलिए रक्षा बन्धन बाँधती थी कि यदि वे उनके सतीत्व पर आक्रमण करें तो भाई उनकी रक्षा करें। परन्तु मनुष्य सर्वसमर्थ तो है नहीं, न जाने कितनी बहनों-माताओं की लाज लुटी होगी। दुष्टों से पवित्रता की रक्षा भी वास्तव में सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए आख्यान प्रसिद्ध है कि कौरवों की भरी सभा में जब द्रौपदी का चीरहरण होने लगा तो द्रौपदी ने भगवान को ही पुकारा था क्योंकि तब कोई भी मित्र या सम्बन्धी उसकी रक्षा न कर सका था। इसलिए ऐसी आपदा के समय लोग भगवान को ही सम्बोधित करके कहते हैं – 'हे प्रभु, हमारी लाज रखो, हमारे धर्म की रक्षा करो! अत: निस्संदेह भगवान ही हैं जो माताओं-बहनों के 'चीर बढ़ाते' हैं अर्थात् उनके सतीत्व और धर्म की रक्षा करते हैं। इसी कारण दुख के समय मनुष्य के मुख से ये शब्द निकलते हैं – ''हे प्रभु, मुझे सहारा दो''।

तीसरी प्रकार की रक्षा है काल के पंजे से रक्षा – मनुष्य तो स्वयं भी कालाधीन हैं। बड़े-बड़े योद्धाओं को भी आखिर काल खा जाता है। सिकन्दर का भी उदाहरण हमारे सामने है। उसने अनेकानेक सैनिकों को मारा और मरवाया परन्तु स्वयं को काल से नहीं बचा सका। निश्चय ही काल के पंजे से छुड़ाने वाले भी एक परमात्मा ही हैं जिन्हें 'कालों का काल', 'महाकाल', 'महाकालेश्वर' (शिव), 'अमरनाथ' अथवा 'प्राणनाथ' भी कहा जाता है। काल से बचने के लिए मनुष्य मृत्युन्जय का पाठ करते हैं अर्थात् परमात्मा शिव की ही शरण में जाने की कामना करते हैं। जन-श्रुति है कि जिस मनुष्य ने अच्छे कर्म किए होते हैं, उसकी मृत्यु होने पर जब यमदूत आते हैं तो भगवान के पार्षद उन यमदूतों को भगा देते हैं। तो वास्तव में परमात्मा की रक्षा मिलने से ही मनुष्य यमदूतों से बच सकते हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा ही अजेय हैं और उन्हीं की महिमा में कहा जाता है कि ''जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय। बाल न बाँका कर सके, चाहे सब जग वैरी होय।''

सांसारिक आपदाओं अथवा लौकिक संकटों से रक्षा चौथे प्रकार की रक्षा है – सदा के लिए दुखों अथवा संकटों से भी एक परमात्मा ही रक्षा दे सकते हैं, कोई भी मनुष्यात्मा यह कार्य नहीं कर सकती। परमात्मा को ही 'संकट मोचन', 'दुख भंजन' और 'सुख दाता' कहते हैं। परमात्मा ही काल और कंटक दूर करने वाले हैं। उन्हें ही 'हरि' अथवा 'हरा' अर्थात् 'दुख एवं संकट हरने वाला' माना जाता है। प्रकृति तो उनकी दासी ही है।

पांचवें प्रकार की रक्षा है माया के बन्धनों से – माया के बन्धन से भी परमात्मा ही छुड़ाते हैं, तभी तो मनुष्य परमपिता को पुकार कर कहते हैं – ''विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।'' गज और ग्राह का जो प्रसंग प्रसिद्ध है, वह भी इसी रहस्य को स्पष्ट करता है कि जब ग्राह गज को निगलने ही वाला था तो भगवान ने ही ऐसे समय उसकी रक्षा की। उसने फूल तोड़कर अपनी सूंड ऊपर की तो भगवान ने यह देखकर कि वह पुष्प चढ़ा रहा है अर्थात् याद कर रहा है, उसकी रक्षा का संकल्प किया। वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ में ज्ञानी मनुष्य ही गज हैं, माया ही एक ग्राह है, यह संसार एक सागर है और कमलरूपी

पुष्प अलिप्त जीवन का सूचक है। अत: आख्यान का भाव यह है कि माया के आघातों से भगवान ही ज्ञानवान मनुष्यों की रक्षा करते हैं। ज्ञान ही स्वदर्शन चक्र है जिससे माया का गला कट जाता है और परमात्मा ही सभी के रक्षक हैं। इसी कारण गीता में ये वाक्य हैं कि साधुओं का भी परित्राण करने वाले परमात्मा ही हैं।

बहनें रक्षा बन्धन क्यों बाँधती हैं?

अब प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा ही पाँचों प्रकार की रक्षा करते हैं तो बहनें, भाइयों को रक्षा बन्धन क्यों बाँधती हैं अथवा ब्राह्मण भी रक्षा बन्धन क्यों बाँधते हैं? इस बात को समझने के लिए आपको यह जानना चाहिए कि इस पर्व को 'विष तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है। इन नामों से सिद्ध है कि यह बन्धन विषय विकारों को छोड़ने और पुण्यात्मा बनने के लिए है। अत: 'रक्षा बन्धन' पवित्रता अथवा धर्म की रक्षा करने का बन्धन है।

आप जानते हैं कि बहन और भाई का सम्बन्ध बहुत पवित्र होता है। अत: बहनों का भाइयों को बन्धन बाँधने का अर्थ भी यही होता है कि भाई यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति को पवित्र बनायेंगे अथवा मन, वचन और कर्म से पवित्र रहकर सभी नारियों से अपनी बहन के समान व्यवहार करेंगे। ब्राह्मणों के द्वारा रक्षा बन्धन बँधवाने का भी अर्थ यही है। प्राचीन काल में सच्चे ब्राह्मण पवित्र रहकर दूसरों को पवित्र रहने की प्रेरणा (शिक्षा) देते थे। अत: इस दिन वे बन्धन बाँधते हैं ताकि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता का व्रत ले। परन्तु आज न तो बहनें ही इस मनसा से 'रक्षा बन्धन' बाँधती हैं और न ब्राह्मण ही। आज मनुष्य इस आध्यात्मिक रहस्य को भूल गया है और वह इस महान पर्व को एक रीति-रिवाज की तरह ही मानता है। इसलिए, आज यह पर्व 'विष तोड़क' अथवा 'पुण्य प्रदायक' पर्व के रूप में नही रहा और व्यक्ति अथवा समाज को इससे वह प्राप्ति नहीं हो पा रही, जो इसे यथार्थ रूप में मनाने से हो सकती है। ❖

अभी क्या जल्दी है?

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

एक अत्यंत सुसंस्कृत और भली नारी थी। उसके माता-पिता ईश्वर भक्त थे इसलिए उन्होंने अपनी पुत्री को भी उत्तम शिक्षा दी। विवाह के बाद वह पति के घर आई। उसने सोचा, स्त्री को पति के हर दुख-सुख में शामिल होना चाहिए परन्तु इससे भी ऊँची और सच्ची सेवा है कि पति को भी आध्यात्मिक ज्ञान देकर ईश्वरीय प्रेम में मगन कर दूँ।

यह सोचकर वह अपने पति को समय-समय पर परमात्मा को याद करने के लिए व श्रेष्ठ कर्मों में विश्वास करने के लिए कहती। पति थे घोर सांसारिक प्राणी। वे पत्नी की बात सुनकर कहते, अभी क्या जल्दी है। अभी तो बहुत दिन पड़े हैं। प्रभु-प्रेम का एक समय होता है जो अभी नहीं आया है। संसार के फलां-फलां कार्य तो कर लेने दो, बाद में तो प्रभु-प्रेम ही करना है।

एक दिन पति बीमार हो गए। वैद्य जी आए, नाड़ी देखी और दवा दी। पत्नी ने दवा लेकर रख दी। जब दवा लेने का समय आया तो पति ने दवा मांगी। उस भली नारी ने कहा, अभी क्या जल्दी है। अभी तो बहुत दिन पड़े हैं, दवा फिर ले लीजिएगा। पतिदेव नाराज होकर बोले, तब दवा क्या मरने के बाद खाने की है? पत्नी ने जवाब दिया, तो क्या परमात्मा को याद करने का पुरुषार्थ भी मृत्यु के बाद का विषय है? मृत्यु कब आयेगी, किसी को पता नहीं। पति ने अपनी भूल स्वीकार कर पत्नी से क्षमा मांगी, अभी से प्रभु-प्रेम करने की प्रतिज्ञा की और सुखमय जीवन जीने की राह पर चल पड़े।

जिस प्रकार दवा खाने में विलम्ब अच्छा नहीं, उसी प्रकार परमपिता परमात्मा से बुद्धियोग जोड़ उनसे ईश्वरीय शक्तियाँ प्राप्त करने में विलम्ब करना भी अच्छा नहीं। ❖

कर्मों का खाता – 2

जून, 2014 अंक में हमने कर्मफल के कई पहलुओं के बारे में जाना, कर्मफल की कुछ अन्य गहराइयों पर इस लेख में विचार करेंगे। मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है, फल भोगने में नहीं। मनुष्य कर्म करके भूल जाता है लेकिन विधि का विधान नहीं भूलता। समय आने पर फल अवश्य देता है। मनुष्य को स्मरण ही नहीं रहता है लेकिन प्रकृति स्मरण रखती है। कितना भी महान या तुच्छ व्यक्ति हो कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है। जैसा करेंगे वैसा भरेंगे – यह निर्विवाद सत्य है। कब भरेंगे, यह तय नहीं है। कुछ कर्म ऐसे हैं जिनका फल तुरंत मिलता है। आग में हाथ डालो तो तुरंत जलेगा, क्रोध करो तो तुरंत अशांत हो जाओगे। काम पर जाओगे, तनख्वाह मिलेगी। दौड़ लगाई, प्यास लगी, पानी पिया, प्यास बुझ गई। भूख लगी, खाना खाया, भूख भी गई। ज्यादा मिठाई खाई, पेट दर्द हो गया। लेकिन सभी कर्म ऐसे नहीं होते हैं, कुछ के फल आने में समय का अन्तराल होता है।

किसी को दोष न दें

यादगार ग्रन्थ रामचरितमानस में प्रसंग आता है, श्रृंगवेरपुर में श्री राम और जनकसुता श्री सीता जी शीशम के वृक्ष के नीचे पत्तों की शैया पर सो रहे हैं। उन्हें इस स्थिति में देखकर निषादराज जी अत्यंत दुखी हो जाते हैं। तब श्री लक्ष्मण जी उन्हें ज्ञान का उपदेश देते हुए कहते हैं –

काहु न कोउ सुख दुख कर दाता।
निज कृत करम भोग सब भ्राता।।
अस विचारि नहिं कीजिअ रोसू।
काहुहि बादि न देइअ दोसू।।

भावार्थ है कि कोई किसी को सुख या दुख नहीं देता, सब अपने किए कर्म का फल भोगते हैं। दुख देने वाला माध्यम मात्र है, जैसे जज किसी के मृत्यु-दण्ड का केवल माध्यम बनता है। इसीलिए जब हमें लगे कि कोई हमें सता रहा है तो हम बार-बार याद करें कि यह हमारे ही कर्मों का फल है और अपने मन में बदला लेने का भाव न लाएं।

अहंकारी होता है अपमानित

समझें, कोई गाली देता है, हम अपमानित होते हैं लेकिन गाली किसी को अपमानित नहीं कर सकती। गाली में वह ताकत नहीं है। अपमानित तो हम होते हैं क्योंकि हमने अहंकार के बीज बोए। हमने अपने को कुछ समझा। हम अकड़ कर रहे। फिर किसी ने गाली दी, गाली हमारे अहंकार के बीज को फोड़ देती है। जैसे भूमि में पड़ा बीज वर्षा आने पर अंकुरित हो जाता है वैसे ही गाली सुनकर हमारे अहंकार का बीज अंकुरित हो गया। बीज होगा ही नहीं तो वर्षा का जल किसे अंकुरित करेगा! अहंकार होगा ही नहीं तो गाली किसे अपमानित करेगी?

कर्त्ता का पीछा करता है कर्म

जैसे ताजा दूध शीघ्र ही नहीं जम जाता किन्तु वैसा ही रखा रह जाये तो विषाक्त हो जाता है। वैसे ही पाप-कर्म शीघ्र ही अपना फल नहीं देता, थोड़ा समय लेता है। कर्म के फल को पकने में देर लगती है, तब तक वह जमा रहता है। समय आने पर उसका फल मिलता है। जैसे हमने माँ-बाप को सुख दिया नहीं, वृद्धावस्था में जब हमारे बच्चे हमें सुख नहीं देते तब सालों पहले किए कर्म का फल मिलता है। बाजरा 90 दिन में, गेहूँ 120 दिन में और आम 5 सालों बाद फल देता है। हम दिन भर में 90 कर्म करते हैं, फल 70 का ही मिलता है। दूसरे दिन 70 कर्म करते हैं, फल 40 का ही मिलता है, तीसरे दिन 40 कर्म करते हैं, फल 70 का मिल जाता है, इसका कारण पुराने जमा कर्मों का फल उस दिन मिल गया। जिनका फल इस जन्म में नहीं मिलता, उनका अगले जन्म में मिलता है। पाप कर्म चाहे एकांत में करें, चाहे वन, गुफा, समुद्र के नीचे करें, वे राख से ढकी हुई अग्नि के समान होते हैं। जब उनका उद्भव होता है तो वे धधक उठते हैं और कर्त्ता को जलाते हुए उसके पीछे लगे

रहते हैं। जब किया हुआ कर्म पक जाता है तब हमें उस कर्म के फल का स्वाद चखने को मिलता है। अब तक वह गुप्त था पर अब हमारे सामने उसका उदय (प्राकाट्य) हो गया है। हमारे किए हुए कर्म (संचित कर्म) समय पूरा होने पर जब पकते हैं तब उनमें फल देने की शक्ति आ जाती है। उसे कर्म का परिपाक भी कहते हैं। जैसे आम के पेड़ पर राई के दाने जितने लाखों फल लगते हैं, उन्हें देख हमें कोई आकर्षण नहीं होता पर जब आम बड़ा हो जाता है तब हमारे मन को अपनी ओर खींच लेता है। कर्म भी जब पक जाता है, अपना अच्छा या बुरा स्वाद हमें ज़रूर चखाता है।

कर्म के फल में बदलाहट

ज़रूरी नहीं, हमने जैसा कर्म किया था, पकने पर वैसा ही फल सामने आए। कर्म करने और फल के पकने के बीच की अवधि में कई प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं जो हमारे मन, वचन, कर्म पर आधारित होते हैं। जैसे हमने बैंक में 5000 रुपये जमा किए जो 5 साल बाद 10 हजार होकर मिलने थे। परन्तु इस बीच के समय में हम उस सावधि जमा के आधार पर ऋण भी ले सकते हैं या बीच में ही उसे खत्म कर सारी राशि प्राप्त भी कर सकते हैं। इसी प्रकार हमारे पुरुषार्थ में भी यह शक्ति है कि हम पूर्व में किए हुए कर्म के फल के सामने आने तक की अवधि में, उससे प्राप्त होने वाले दुख या सुख को घटाने-बढ़ाने या बदलने का उपाय कर सकते हैं। कर्म के फल में घट-बढ़ या बदलाहट कैसे होती है, उसे समझना अनिवार्य है। हमने एक पुण्य का कार्य किया। इसका फल हमें 5 साल बाद मिलना था। परन्तु हमारे पुण्य कार्य के फलस्वरूप इतनी महिमा हुई कि हमें अहंकार आ गया जिससे उस पुण्य के बीज का अंकुरण बहुत कमज़ोर हो गया। पांच साल बाद जो कई गुणा होकर मिलना था वह कई गुणा कम होकर अर्थात् जहाँ खज़ाना मिलना था वहाँ मात्र बटुआ ही मिला। दूसरा उदाहरण, हमने एक पाप कर्म किया। इसका फल भी पांच साल बाद भयंकर रूप में मिलना था पर पाप कर्म करते ही हम इतने पश्चाताप में डूबे और प्रायश्चित रूप अच्छे कर्मों में प्रवृत्त हो गए। फल यह निकला कि पाप कर्म का अंकुरण बहुत कमज़ोर हो गया। पांच साल बाद फल तो निकला पर सूली से कांटा होकर निकला।

साक्षी भाव से कर्मफल का निपटारा

यह तो कर्म के फलने तक की अवधि के बीच में घट-बढ़ हुई परन्तु कर्म के फलने के बाद हमारा व्यवहार कैसा होता है, इसका भी बहुत बड़ा महत्व है। कर्म का फल सामने आने पर यदि हम उसके सुख-दुख में मन को लिप्त कर लेते हैं तो उसके फिर-फिर आने की सम्भावना बन जाती है। यदि कर्म के फल से सुख आया और हम उसमें इतने उन्मत्त हुए कि लोक, परलोक, कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य सब भूल गए। मानवीय गरिमा भी दरकिनार हो गई, आचार-विचार तमोगुणी हो गए। दुख आया तो अधीर होकर पागल हो गए, उसे टालने के लिए आसुरी अवगुणों का सहारा लेने लगे, अपनी करनी के फल के लिए दूसरों को दोष देकर नए-नए वैर बांधने लगे, अहंकार का प्रदर्शन करने लगे। कर्मफल के प्रति ऐसी आसक्ति पुनः बन्धन का कारण बनती है। ऐसे व्यवहार के कारण वैसा ही या उससे अधिक कड़ा कर्मबन्धन जुट जाता है। जितना भोगकर निपटाया उससे कहीं अधिक बंध जाते हैं। जैसे किसी मेहमान के आने पर यदि हम उसके साथ मन को लिप्त कर लेते हैं तो वह फिर-फिर आएगा। यदि उदासीन हो गए तो फिर आने में थोड़ा कतराएगा, आएगा नहीं। इसलिए परमात्मा पिता कहते हैं, निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ, दुख-सुख.....में मन की स्थिति अचल और स्थिर रखो। निन्दा हुई या स्तुति हुई वह तो पूर्व कर्म का फल है पर अब मन को उसमें उलझाकर कर्मबन्धन की डोर को कड़ा मत करो। दुख-सुख जो भी आया, उसे आने दो, साक्षी हो जाओ। न्यारे रहोगे तो आकर चला जाएगा। दुबारा नहीं आएगा। कर्मबन्धन कट जाएगा।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

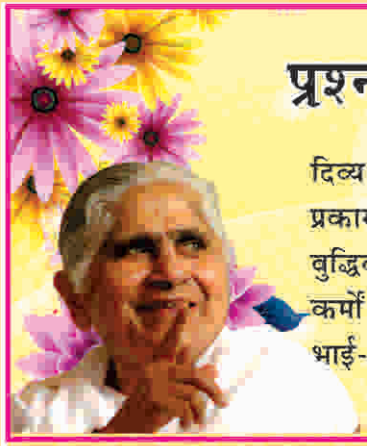

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- बाबा की याद स्थाई न रहने के कारण क्या हैं?

उत्तरः- जब तक त्याग-वृत्ति नहीं है तो बाबा याद नहीं आयेंगे। अन्दर से त्याग-वृत्ति तब ही होगी जब बाबा से जो मिला है, जो प्राप्ति हुई है उसकी स्मृति होगी। बहुत ऊंची प्राप्तियां हुई हैं, उनकी भेंट में सब कुछ तुच्छ है। सेवा में मान मिला, शान मिला उसमें जो खुश होता है या अपमान महसूस करता है, माना बाबा से जो प्राप्ति हुई है, उसकी वेल्यू नहीं है। बाबा से जो भी प्राप्तियाँ हुई हैं वो सारी इमर्ज करो। एक है बाबा की पालना, ऐसी पालना मिली है जो सारे कल्प में फिर नहीं मिलेगी। तबीयत को कुछ हो जाए तो भी बाबा सम्भालता है, यह अनुभव है। मैं इस शरीर में आत्मा हूँ, यह शरीर मेरे बाबा की अमानत है, इसको अच्छी तरह से सम्भालना है। यह शरीर मेरा नहीं है, इन बातों को अन्दर ही अन्दर जीवन में लाने से जीवन-यात्रा बड़ी अच्छी होती है। मेरी भावना है, जो प्यार मुझे मिला है वो सबको मिले। आप बाबा के इतने अच्छे बच्चे बनो, त्याग में भी सम्पूर्ण त्यागी, कोई इच्छा न हो। **भूल से भी कोई भी देहधारी से लगाव हुआ या प्रभावित हुआ या किसी के लिए घृणा रखी तो बाबा याद नहीं आयेगा।** हिम्मते बच्चे, मददे बाप वाला जो सौदा है, वो कैन्सिल हो जाएगा। बाबा कहते, किसके साथ फैमिलीयरिटी (नाम-रूप) में बातचीत करना या किनारा करना, यह बड़ी भूल है। बाबा चाहते हैं, मेरे सारे बच्चे राज्यपद पायें इसलिए राजयोग सिखाता है, राजाओं का राजा बनाता है। जैसे मैंने बाबा से प्यार लिया है, ऐसे तुम भी लो और सबके साथ मिलनसार होके रहो, यही है निरंतर योग। कभी भी कोई संकल्प निराशा का नहीं आयेगा। कुछ भी हो जाए हिम्मत नहीं छोड़ेंगे। कोई मुझे कितना भी बुरा समझे, मैं जैसी हूँ, वैसी बाबा की हूँ। ऐसी-वैसी बातें भले कानों में कितनी भी आई हों, मेरे कान इसके लिए नहीं हैं। जो कुछ मेरे से भूल होती है, मैं बाबा को सुनाती हूँ तो बाबा उसे माफ करता है। मुझे भी माफ करना आना चाहिए। समझो, मेरे से किसी को तकलीफ हुई, तब बाबा माफ नहीं करेगा। जिसके साथ ऐसा व्यवहार हुआ, उससे ही माफी मांग लेवें, तो थोड़ा हल्का हो सकता है। लेकिन अभिमान के कारण कहेंगे, इसने किया तब मैंने कहा, ऐसे थोड़े ही किया। ऐसे अभिमान वाले फिर निरंतर याद में नहीं रह सकेंगे। आत्मा देह-अभिमान के वश गफलत करने की आदी हो गई है। भले ही बहुत देह-अभिमान गया पर थोड़ा भी अन्दर रहा हुआ है, जिस कारण कभी फीलिंग आ जाती है तो बाबा याद नहीं रहता है।

प्रश्नः- शिवबाबा की निरन्तर याद का क्या अर्थ है?

उत्तरः- आत्मा में मन-बुद्धि-संस्कार हैं, मन को मैंने पुरुषार्थ में लगा दिया, बुद्धि में ज्ञान को धारण किया तो याद में रहने का नेचुरल संस्कार बन गया। अब मन न चलायमान होता है, न

डोलायमान होता है। अगर चलायमान हुआ तो इसका अर्थ है, बुद्धि में ज्ञान कम है। बुद्धि में आत्मा का, परमात्मा का, ड्रामा का अच्छा ज्ञान है तो आत्मा, परमात्मा और ड्रामा की याद एक्यूरेट रहती है। जब से मैं बाबा के पास आई हूँ, योग पर बहुत अटेन्शन रखा है। कभी भी कोई काम के लिए बाबा ने मुझे बुलाया नहीं होगा, अपने आप हाज़िर हो गयी होंगी। सामने आते ही बाबा कहते, जनक यह करना है। जी बाबा। बहुत फायदा लिया है। जो काम भाई नहीं कर सकते थे वो भी बाबा ने करवाया। अभी इस उम्र में भी मेरी स्मृति ठीक है, यह बाबा की कमाल है ना! बाबा है मेरा साथी, बन जाना है साक्षी, साक्षी हैं तो योगी हैं, यह गोपनीय ज्ञान है। बाबा साकार में कभी अपना फोटो रखने नहीं देते थे पर अव्यक्त बाबा ने कहा, रखना है। अव्यक्त बापदादा ने कहा, मैं गया नहीं हूँ, बच्चों के साथ हूँ, जब भी चाहो मेरे से मिलना। कमरे में जब भी आओ तभी बाबा से मिलो।

प्रश्नः- डर क्यों लगता है, उसे कैसे जीतें?

उत्तरः- कोई कमज़ोरी है तभी डर लगता है। सर्वशक्तिवान बाबा मेरे साथ है तो डर नहीं लगेगा। चेक करना है अपने आपको और निर्भय, निर्वैर बनना है। किससे भी वैरभाव होगा तो बदला लेने की भावना होगी, थोड़ा डर रहेगा। तो यह भी चेक करना है। मुझे डर नहीं है, ईश्वरीय परिवार के लिए प्यार है। देह-अभिमान में रहने की आदत होने के कारण थोड़ा भी शरीर में कुछ होता है, दर्द है, तो शक्ल ऐसी बनायेंगे जैसे सबसे ज्यादा दुःखी आत्मा हैं। जीवन में दुःख होता क्या है, मुझे पता नहीं है। ऐसा सुख बाबा ने दिया है जो दुःखहर्त्ता-सुखकर्त्ता बना दिया है।

प्रश्नः- विकर्माजीत बनने वाले की निशानियाँ क्या होंगी?

उत्तरः- हरेक अपने को देखे, हमको अपने ऊपर ध्यान रखना कितना ज़रूरी है। ज्ञान माना सिर्फ कानों से सुनना, मुख से बोलना नहीं है, ध्यान रखना है। जैसे टेन्शन के आगे ए लगा दो तो अटेन्शन आ जाएगा, टेन्शन से फ्री हो जायेंगे। जीना हो तो ऐसे जीओ, सिर्फ अटेन्शन... मरो तो अटेन्शन से मरो, टेन्शन से नहीं मरो। हमको पता है कि विकर्माजीत, कर्मातीत, सम्पूर्ण फरिश्ता बनके जाना है घर। बनना यहाँ है, क्लीयर पिक्चर है, पहले विकर्माजीत बनना है। कभी मेरे से ऐसे कर्म नहीं हों तभी विजयी रत्नों में आयेंगे। विकर्माजीत बनने वाली आत्मा को कभी फालतू ख्याल नहीं आयेगा। मन में है तो वाणी में आया, कर्म में आया, विकर्म बन गया। तो संकल्प, वाणी और कर्म पर अटेन्शन रखो। बाबा ने कहा, ऐसी स्थिति बनाने के लिए अमृतवेला पॉवरफुल हो। साकार में ही बाबा ने टीचर रूप में सब अच्छी तरह से सिखाया कि 4 बजे उठो, आँखें खोलके बैठो, योग के समय लाल बत्ती जले, गीत बजने से पहले क्लास में आके सामने बैठ मुरली सुनो, सामने बैठने की हिम्मत चाहिए, यह भी सभ्यता है।

प्रश्नः- आज यज्ञ का इतना विस्तार हो रहा है, फिर भी लगता है कि यज्ञ किस तरह से आगे चलेगा, आप क्या कहेंगे और इसके लिए बाबा के क्या महावाक्य सुनायेंगे?

उत्तरः- पर्सनल हमारे से पूछेंगे तो हमारा कभी क्वेश्चन नहीं उठता है कि यज्ञ कैसे चलेगा? हम कराची को सामने रखते हैं। भगवान के पास प्लान है, हमको बुद्धि को प्लेन रखना है और प्रैक्टिकल सेवा में लग जाना है। प्लान गॉड का है, कोई इन्सान का नहीं है जैसेकि दादी को निमित्त बनाया और मेरे को विदेश में भेज दिया, क्या मैं वहाँ के लिए थी? गॉड्स प्लान। बस, सिर्फ उस प्लान अनुसार चलते चलो। ड्रामा की नॉलेज इतनी एक्यूरेट है, कैसे होगा, क्या होगा... की बात ही नहीं रहेगी। बेहद बाबा, बेहद सेवा कराने के निमित्त बनने वालों को अंगुली पर नचा रहा है। जो सेवा कर रहे हैं, बाबा की अंगुली पर नाच रहे हैं।

❖

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 10

❊ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

अब तक हमने यज्ञ के वर्तमान एवं भविष्य के कारोबार को योग्य एवं सफल बनाने हेतु दो बातों पर विचार किया है। आज इस संदर्भ में मैनेजमेन्ट गुरुओं के अनुसार कही गई तीसरी बात पर विचार करेंगे।

मैनेजमेन्ट गुरुओं के मतानुसार कारोबार में सफलता का तीसरा मुख्य गुण है– विश्वसनीयता अर्थात् भरोसेमंद होना (Credibility), साधारण शब्दों में कहें तो विश्वासपात्र बनना और सदा विश्वासपात्र रहना।

विश्वसनीयता का गुण सफल कारोबार के लिए अति आवश्यक है क्योंकि विश्व के इतिहास में देखा गया है कि जब-जब भी किसी राज्यसत्ता का पतन हुआ है तो वह इस गुण के अभाव से ही हुआ है। राजाओं के जो अत्यंत विश्वासपात्र लोग थे उन्होंने राजाओं को धोखा (दगा) दिया परिणामत: युद्ध में राजाओं की हार हुई अथवा उनके राज्य का पतन हुआ। जैसे कि बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के विश्वासपात्र सेनापति मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाने का लालच देकर रॉबर्ट क्लाइव ने अपनी तरफ कर लिया और बंगाल पर आधिपत्य कर लिया। टीपू सुलतान के वित्त मंत्री मीर सादिक को भी अंग्रेज़ों ने लालच देकर अपना बनाया, मीर सादिक ने टीपू सुलतान को दगा दिया और परिणामत: पराक्रमी टीपू सुलतान की युद्ध में पराजय हुई। इतिहास के पन्नों में ऐसे अनेक वृत्तांत बताये हुए हैं जिस कारण जीतने का इतिहास बनने की बजाय हारने का इतिहास बन गया। अंग्रेजी के शब्दकोष में जो दो शब्द हैं - but and if वे इतिहास के शब्दकोष में नहीं होते हैं। इतिहास सदा ही नई बातों की वास्तविकता के आधार पर रचा जाता है।

विश्वासपात्रता की बात के बारे में महाभारत में श्रीकृष्ण और भीष्म के बीच बहुत सुन्दर संवाद बताया गया है। नौ दिनों तक भीष्म ने युद्ध किया और इन नौ दिनों में पाण्डव पक्ष के अनेक सैनिकों की मृत्यु देख श्रीकृष्ण, जिन्होंने युद्ध में शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा की थी, ने भी शस्त्र उठाया और भीष्म का वध करने के लिए आगे बढ़े तो भीष्म ने श्रीकृष्ण को उनकी प्रतिज्ञा याद दिलाई और कहा कि मैंने तो अपनी प्रतिज्ञा के हिसाब से कुरुवंश का विश्वासपात्र बनने का प्रयत्न किया है। मैंने अपने पिता शांतनु के समक्ष प्रतिज्ञा की थी कि मैं सदा ही कुरुवंश की रक्षा करूँगा और उसी अनुसार मैंने कार्य किया है। श्रीकृष्ण ने उन्हें कहा कि पाण्डव भी कुरूवंश के ही हैं और शांतनु के ही वारिस हैं फिर भी जब लाक्षागृह जलाया गया, जुआ खेला गया और द्रौपदी वस्त्रहरण हुआ तब आप केवल देखते रह गये और आपने पाण्डवों के लिए कुछ भी नहीं किया तो यह कौन-सी विश्वसनीयता है? प्रतिज्ञा वह होती है जिससे समाज का अच्छा हो परंतु आपकी प्रतिज्ञा से तो कुछ भी अच्छा नहीं हुआ। आपने सत्य का स्वरूप तो पहचाना परंतु धर्म का स्वरूप नहीं पहचाना। फिर श्रीकृष्ण ने एक बहुत गुह्य सनातन सत्य उन्हें बताया। उन्होंने कहा कि यदि आपकी विश्वसनीयता समस्त कुरूवंश के प्रति होती (ना सिर्फ हस्तिनापुर के सम्राट के प्रति) तो जब मैं संधि का प्रस्ताव लेकर आया तब आप उसे स्वीकार करते पर आपने अपनी झूठी विश्वसनीयता के आधार पर कुछ भी नहीं बोला अर्थात् मौन रहे और इस कारण यह कुरुक्षेत्र का युद्ध हो रहा है। इतने बड़े मानव संहार का एकमात्र कारण है आपकी झूठी विश्वसनीयता हस्तिनापुर की राजसत्ता के प्रति। इतना बड़ा नरसंहार आपकी एक गलत मान्यता-प्रतिज्ञा-समझ के

कारण हुआ। तब भीष्म ने श्रीकृष्ण से पूछा कि मैं अब क्या करूँ? श्रीकृष्ण ने कहा कि अब आप शस्त्र त्याग दो और मृत्यु की प्रतीक्षा करो। उस अनुसार भीष्म ने शस्त्र त्याग किये और शरशैय्या पर लेट गये। जब भीष्म ने शस्त्र त्याग कर दिये तो अंत में पाण्डवों की विजय हुई। मैं यह बात केवल संदर्भ के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ कि विश्वसनीयता के गुण और अवगुण के परिणाम में कितना ज्यादा अंतर है।

जैसे दुनिया में भी विश्वसनीयता के आधार पर कार्य करना ज़रूरी मानते हैं वैसे परमात्मा के इस श्रेष्ठ दैवी कार्य में भी विश्वसनीयता का गुण चाहिए। एक बार मैंने प्यारे ब्रह्मा बाबा से पूछा था कि बाबा, आप हमारी इतनी परीक्षा क्यों लेते हैं, दुनिया का कोई भी बाप अपने बच्चों की ऐसे परीक्षा नहीं लेता और आप तो परमात्मा पिता हैं आपको तो हमारी मदद करनी चाहिए परंतु आप तो हमारी परीक्षा लेते हैं, ऐसा क्यों? जवाब में बाबा ने कहा था कि बच्चे, आप दो आने का एक मटका बाज़ार में खरीदने जाते हों तो उसकी पूरी जाँच-परख करके ही खरीदते हो कि कहीं कोई छेद आदि तो नहीं है। मैं तो आप बच्चों को 2500 वर्ष का राज्यभाग्य देता हूँ तो बिना जाँच-परख के थोड़े ही दूँगा। मुझे बच्चों को योग्य बनाने के लिए उनकी समय-समय पर परीक्षा लेनी पड़ती है। जब आप बच्चे योग्य बन जाते हो तब मैं 2500 वर्षों के लिए आपके हाथ में विश्व का राज्य कारोबार सौंप कर निश्चिन्त हो कर चला जाता हूँ अर्थात् विश्वासपात्र बच्चों के हाथ में भविष्य की धरोहर देता हूँ। फिर मैंने बाबा को कहा कि बाबा, और जो भी धर्मस्थापक आये उन्होंने अपने अनुयायियों की विश्वसनीयता की इतनी परीक्षा नहीं ली जितनी आप हम बच्चों की लेते हैं, तो बाबा ने कहा कि बच्चे, मेरे और उनके कारोबार में यही फर्क है कि धर्मस्थापक तो द्वापरयुग में आते हैं। उस समय ये आत्मायें अपनी स्थिति में रजोप्रधान होती हैं और उनके धर्म का प्रचार-प्रसार तथा रक्षा करने वाली आत्मायें भी अपने रजोप्रधान स्वरूप में होती हैं पर मैं तो जन्म-मरण रहित हूँ। मैं जब आता हूँ तब आप बच्चों के सामने ही आता हूँ और उस समय तक आप बच्चे पूरे तमोप्रधान बने हुए होते हो तो ऐसे सम्पूर्ण तमोप्रधान बच्चों को पूर्णरूपेण सतोप्रधान बनाकर नये विश्व का 2500 वर्ष तक का कारोबार सौंपता हूँ। वे धर्मस्थापक तो स्वयं ही समाज के सामने आकर कार्य करते हैं पर मैं आप बच्चों के सामने ही आता हूँ। इस प्रकार विश्वसनीयता के लिए योग्य व्यक्ति को चुनना बहुत जरूरी होता है और व्यक्ति को विश्वासपात्र बनाने और उसकी योग्यता को परखने के लिए परीक्षा तो लेनी ही पड़ती है। इसलिए मैं आप बच्चों की इतनी परीक्षा लेता हूँ।

प्यारे ब्रह्मा बाबा ने मातेश्वरी जी से पहले ही दिन की बातचीत में उनकी परीक्षा ले ली और फिर उनको विश्व सेवा के निमित्त बनाया। हम आज भी मातेश्वरी जी का गायन करते हैं। मातेश्वरी जी ने प्रथम मुलाकात में ही शिवबाबा का विश्वास प्राप्त किया।

मातेश्वरी जी ने जब अपना पार्थिव शरीर त्याग किया उसके बाद 1 अप्रैल 1966 की लिथो की हुई मुरली के अंतिम आधे पेज पर ब्रह्मा बाबा ने आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी तथा आदरणीया दीदी मनमोहिनी जी की नियुक्ति की क्योंकि उस समय यज्ञ में दादी कुमारका को 3/4 मम्मा कहते थे तथा यज्ञ के संचालन के कारोबार में ब्रह्मा बाबा के साथ दीदीजी भी बहुत अनुभवी हो गये थे। उन दोनों ने ब्रह्मा बाबा का पूर्ण विश्वास प्राप्त किया था। इसलिए जब ब्रह्मा बाबा ने 18 जनवरी 1969 को शरीर छोड़ा तो शरीर छोड़ने से पहले बाबा ने दादी प्रकाशमणि जी के हाथ में हाथ देकर सभी शक्तियाँ विल कर दीं अर्थात् बाबा अपने विश्वासपात्र बच्चों के हाथ में सब कारोबार सौंप कर निश्चिंत हो गये। ब्रह्मा बाबा का दादी प्रकाशमणि जी एवं दीदी मनमोहिनी जी पर पूर्ण

विश्वास था और वे बाबा के इस विश्वास पर खरी उतरीं। दादी प्रकाशमणि जी ने 1969 से 2007 तक यज्ञ का कारोबार सफल रीति से करके विश्वसनीयता का सबूत दिया।

शास्त्रों में भी कहा गया है 'राजाय कालस्यकारणम्' या काल: राजस्यकारणम्' अर्थात् राजा के आधार पर काल का निर्माण होता है या काल राजा का निर्माण करता है। राजा योग्य काल का निर्माण करता है इसलिए राजपद के अधिकारी सदा ही योग्य होने चाहिएँ जिससे कि वे अपने गुणों के आधार पर श्रेष्ठ समाज की स्थापना कर सकें। जहाँ राजायें श्रेष्ठ राज्यकारोबार करने में सफल नहीं हुए और उनके अवगुणों के कारण समाज को नुकसान हुआ है ऐसे राजाओं के बारे में भी संस्कृत में एक श्लोक है, 'राजा नश्यति दर्पेण ब्राह्मणों राजसेवया। गावोपूरप्रचारेण हिरण्य लोभलिप्सया।' इसका सरल भाषा में अर्थ होता है – राजायें अति अभिमान से नष्ट होते हैं, ब्राह्मण अपनी जन्मजात सेवायें छोड़कर राजाओं की सेवा करने लग जाते हैं, गायें दूर-दूर तक चली जाती हैं और धनसम्पत्ति के मालिक लोभवश नष्ट हो जाते हैं। अत: विश्वसनीयता का नये विश्व राज्य कारोबार में बहुत बड़ा स्थान है।

जब यज्ञ में ज्ञानसरोवर का निर्माण हुआ तो दादीजी ने हरेक विभाग में योग्यता अनुसार विश्वासपात्र व्यक्तियों को निमित्त बनाया। दादीजी उन सभी को समय प्रति समय उनकी ज़िम्मेदारी का एहसास कराती थी। इसी प्रकार जब शान्तिवन बन रहा था तब भी दादीजी दो मास तक रोज़ पाण्डव भवन से शांतिवन आते रहे और पूरे कारोबार का ध्यान रखते रहे। वहाँ के विभागों के लिए भी उन्होंने योग्य व्यक्तियों को निमित्त बनाया और उन्हें उनकी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाया। परिणामस्वरूप जिनको भी उस समय निमित्त बनाया वे सभी आज भी अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियों को बखूबी निभा रहे हैं।

छोटी-छोटी बातें तो परीक्षा के रूप में आती रहेंगी परंतु ऐसी सभी परीक्षाओं के समय पर अव्यक्त बापदादा ने तथा दादियों ने हम पर विश्वास अथवा भरोसा रखा है। अव्यक्त बापदादा के भरोसेमंद अथवा विश्वसनीय बनना बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि कई बार हम माया के वशीभूत होकर परीक्षाओं में असफल होते हैं और परिणामस्वरूप हम साधारण प्रजा या साहूकार के पद के अधिकारी ही बन पाते हैं। परंतु राजा या राजपरिवार के सदस्य बनने के चुनाव में सफल होना बहुत बड़ी चुनौती है और इस चुनाव में आप सभी सफल हों, यही मेरी शुभकामना है।

विश्वासपात्रता के बारे में एक बात और ज़रूरी है कि कई बार दैवी परिवार के भाई-बहनों से ऐसा कारोबार या व्यवहार होता है जिसे देखकर हमें प्रश्न उठता है कि क्या बाबा के बच्चे ऐसा कर्म कर सकते हैं। परंतु बाबा कहते, बच्चे सतयुगी राजधानी अभी ही स्थापन हो रही है और सभी आत्मायें अपने-अपने पुरुषार्थ के आधार पर अपना पद निर्धारित करती हैं इसलिए ऐसी आत्माओं के प्रति नफरत या घृणा की भावना न रखो। सतयुग में भी सब प्रकार के लोगों जैसे चण्डाल आदि कनिष्ट पद वालों की भी आवश्यकता है और वे सभी भी इसी दैवी परिवार से आयेंगे। बाबा कहते, बच्चे, आप सबके साथ प्रेम से व्यवहार करो क्योंकि एक विशेषता तो दैवी परिवार के सभी भाई-बहनों में है कि इन सभी आत्माओं ने परमात्मा को पहचाना है परंतु ये आत्मायें परमात्मा की विश्वासपात्र नहीं बन पाईं और माया की विश्वासपात्र बनीं।

इसलिए मेरी दैवी परिवार के सभी भाई-बहनों से विनती है कि **परमात्मा का विश्वासपात्र बन उनका राइट हैण्ड बन श्रेष्ठ पद का अधिकार प्राप्त करना यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इस लेख का स्लोगन है - परमात्मा के विश्वासपात्र अर्थात् राइट हैण्ड बनो और सबको ऐसा बनाओ।** ❖

'पत्र' संपादक के नाम

दिनभर काम करके, थककर घर आते हैं तो हमारा मन विचलित हुआ रहता है परंतु तब ज्ञानामृत पढ़ने से मन को शान्ति मिलती है। मन शुद्ध और अवस्था सही हो जाती है। सोचने का तरीका बदल जाता है। सब कुछ अच्छा ही करने का मन करता है। ज्ञानामृत से प्यारे ब्रह्माबाबा का जीवन चरित्र पढ़कर बहुत प्रेरणा मिलती है। 'ज्ञानामृत' के लेख लक्ष्य प्राप्त करने का एक साधन हैं।

– यू.एस.राघवेन्द्र राव, सेलवास

मुझे श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान अनेकानेक भाई-बहनों के ज्ञानामृत में छपे अनुभव-युक्त लेखों से सरलता से समझ में आया मानो यह गीता शास्त्र की प्रयोगात्मक पत्रिका है। इससे मन की शंका दूर हुई और कई आत्माओं को तनावमुक्त, रोगमुक्त, व्यसनमुक्त करने का सौभाग्य मिला। ज्ञानामृत मासिक संस्कार परिवर्तन की खुली प्रयोगशाला है।

– ब्रह्माकुमार डॉ.गोवर्धन भाई, पुराडा (गडचिरोली)

ज्ञानामृत पढ़ना शुरू किया तो मुझे अद्भुत दिव्य अनुभूति होने लगी। जो बातें मैं सात दिन के कोर्स में नहीं समझ सका था, ज्ञानामृत से समझ में आने लगी। इसमें सम्पादित एक-एक लेख ऐसा होता है जैसे पीड़ित व्यक्ति को जल्दी से जल्दी ठीक करने के लिए औषधि। यह आत्मा की बीमारियाँ (विकार, व्यर्थ चिंतन आदि) ठीक करती है।

– पंकज भगत, बुरारी, दिल्ली

ज्ञानामृत में मन के उलझे हुए सवालों का जवाब स्वत: ही मिल जाता है। लेखों के मुख्य अंश नोटबुक में उतार लेता हूँ, जो हर समस्या का समाधान करते हैं। पत्रिका संस्कारों और वायब्रेशन को शुद्ध करने का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

– गजराम सिंह यादव, एडवोकेट, उझानी, बदायूँ

मई 2014 अंक में ''दवाओं की दवा आध्यात्मिकता'' के बारे में समझने का अवसर मिला। आपकी पत्रिका के लेख सारगर्भित व दिल को छू लेने वाले होते हैं।

– पवन कुमार कानुन्गा, हुबली

संजय की कलम से और सम्पादकीय लेख ज्ञान की गहराई होने के कारण मेरी विशेष पसन्द हैं। इनके द्वारा बाबा के जिज्ञासु बच्चों को आध्यात्मिक ज्ञान के व्यवहारिक फायदों की जानकारी देती हूँ। प्रकाशित हुए अनुभव सुनाकर बाबा के नए बच्चों को ईश्वरीय मार्ग में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करती हूँ। हर एक पेज पर स्लोगन अनमोल चिंतनमणि है। दिल से पढ़ने की तीव्र इच्छा होने के कारण नींद का त्याग कर जरूर पढ़ती हूँ।

– ब्रह्माकुमारी चेतना, सेटेलाइट, अहमदाबाद

ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने से मेरी सोच में काफी बदलाव आया है। पहले मुझमें बहुत अहम् था लेकिन अब गलती होने पर मुझे माफी मांगने में हिचकिचाहट नहीं होती है। अब हर आत्मा के प्रति अच्छा सोचना, खुश रहना और दूसरों को खुशी देना, घर का वातावरण खुशनुमा रखना, कार्य करते समय उमंग और उत्साह में रहना सरल लगता है। उम्मीद करती हूँ, मुझमें जो भी कमियाँ हैं, बाबा के ज्ञान, योग से और ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ कर जीवन में उतारने से बहुत जल्दी दूर हो जाएँगी।

– ब्र.कु.दीपा मेघराजानी, पूणे

ज्ञानामृत में ज्ञान न हो, ऐसा कब हो सकता है, हर आलेख पाप के दागों को भी धो सकता है, आत्मा को परमात्मा तक पहुँचाकर, सारे जग में प्रेम-बीज बो सकता है। पत्रिका में सर्व धर्म समभाव तथा आध्यात्मिक ज्ञान का बेजोड़ संगम दृष्टिगोचर हुआ।

– प्रेमनारायण पाठक ''अरुण'' सटई, छतरपुर (म.प्र.)

भानुदास से भानुप्रकाश बनाने वाली दादी

* ब्रह्माकुमार भानुप्रकाश, शान्तिवन

बचपन में ही ज्योतिषी ने दादी जी का हाथ देख कर कह दिया था कि यह बच्ची तो कृष्ण अर्पण होने के लिए पैदा हुई है। बाबा को मिलते ही एक दृष्टि में ही वे यज्ञ में तन-मन से समर्पित हो गई। बाबा की सम्पूर्ण श्रीमत का पालन करते हुए भारत के कोने-कोने में जाकर अपनी विशेषताओं से और अनुभवों से अनेक आत्माओं का जीवन श्रेष्ठ बनाया। स्वयं ब्रह्मा बाबा ने अव्यक्त स्वरूप धारण करने के पहले दादी जी के हाथ में हाथ देते हुए, शक्तिशाली दृष्टि देते हुए सारी शक्तियों को विल कर दिया।

बेहद के दिल वाली दादी जी

सागर समान दिलवाले बापदादा ने जिस प्रकार दादी जी को बेहद के कार्य की ज़िम्मेवारी दी उतने ही विशाल दिल से दादी जी ने यज्ञ को निर्विघ्न बनाते हुए आगे बढ़ाया। हर एक आत्मा की विशेषता को देखकर ज़िम्मेवारी दी और हर एक पर विश्वास रख आगे बढ़ाया जिससे हर एक यज्ञ-वत्स पूरी लगन और ईमानदारी से यज्ञ-सेवा में अथक रहा है। मधुबन का किला मज़बूत बनता गया। एक के बाद एक परिसर विकसित होते गए और मधुबन की वृद्धि होती गयी। सेवाओं में दादी जी का स्लोगन था – भले करो।

दादी जी शुरू से ही ज्ञान-योग में मस्त रहती थी। रात को सोने से पहले वा अमृतवेले के बाद ज़रूर मुरली पढ़ती थीं। इस कारण अनेक प्रकार की टचिंग, प्रेरणायें दादी जी को प्राप्त होती थीं जिन्हें वे क्लास में या मीटिंग में सबको सुनाती थीं और सभी में उमंग-उत्साह आ जाता था। फिर सभी उस कार्य में जी जान लगा देते थे और सब कुछ करके दादी जी ने कभी यह नहीं कहा होगा कि मैं यह कहती या मेरा यह विचार है, दादी जी हमेशा कहती – यह दादी का विचार है।

पालना की प्रतिमूर्ति

जैसे साकार बाबा ने हरेक आत्मा को अपनेपन की पालना दी, उसका हर प्रकार से ध्यान रखा ऐसे दादी जी भी हर एक का बहुत बारीकी से ध्यान रखती थीं। बापदादा के मिलन के समय हज़ारों आत्माओं का हाल-चाल पूछती, सब ठीक-ठाक पहुँच गये, सबको रहने की व्यवस्था ठीक मिली, सबकी तबियत ठीक है आदि-आदि। फिर कहती, अगर किसी को कुछ तकलीफ हो तो दादी को बताना। जैसे बापदादा के लिए कहते, इतना प्यार करेगा कौन? ऐसे हर एक को दादी जी के लिए दिल से प्यार था, माँ की भासना थी। इसलिए आज भी हर दिल से निकलता है ''मेरा बाबा, मेरी दादी''। इतना बड़ा यज्ञ चलाने के लिए जो व्यक्तित्व चाहिए वह दादी जी में था। उनमें सबसे बड़ी विशेषता

थी हर बात का बैलेन्स। ज्ञान-योग-सेवा का बैलेन्स। बड़े दिल से खर्चा करना और इकॉनामी भी रखना – दोनों का बैलेन्स दादीजी के व्यवहार में झलकता था। अपने लिए कम से कम और बाबा के बच्चों के लिए पूरा ध्यान रखती थीं।

दादी जी ने मुझे अलौकिक नाम दिया

दादी जी की परखने की शक्ति बहुत ही अद्भुत थी। जब हम शान्तिवन में समर्पित हुए तो एक महीने के लिए दादी कॉटेज में सेवा मिली। उस समय दादियाँ बाहर आते-जाते शान्तिवन में रुकती थीं। एक बार हम दादी जी और उनके साथियों को भोजन परोस रहे थे। दादी जी ने बड़े प्यार से पूछा, भाऊ, क्या नाम है आपका? मैंने सहमे अन्दाज में कहा, भानुदास। दादी जी बोले, बाबा के बच्चे किसी के दास नहीं होते। आज से दादी आपका नाम भानुप्रकाश रख रही है। आपको कोई पूछे तो भानुप्रकाश ही बताना। तब से मन में यह प्रेरणा सदा रहती है कि मैं प्रकाशमणि माँ का बेटा भानुप्रकाश हूँ। मुझे सारे विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैलाके बापदादा को प्रत्यक्ष करना है।

हम सभी बड़े ही आदर से प्रेरणा लेते हुए दादी जी के स्मृति दिवस को मनाते हैं। इस बार हम सभी यह संकल्प लें कि हम अपनी स्थिति को ऊँचा उठाते हुए स्वयं को और यज्ञ को निर्विघ्न आगे बढ़ायेंगे, सेवाओं के नये-नये प्लैन बनाते हुए दादी जी और बापदादा की आशाओं को पूर्ण करेंगे। यही सही मायने में दादी जी के प्रति हमारी श्रद्धांजली होगी। ❖

रक्षाबंधन पर विशेष..

राखी का उपहार

ब्रह्माकुमारी विदुषी, जगराओं (पंजाब)

भाई – आओ प्यारी बहना, क्या तुम राखी बांधने आई हो?
प्रेम से बांधो राखी, इस उत्सव की आज बधाई हो।

बहन – मिले प्रेम से बहन और भाई, उत्सव यह कितना अनोखा है।
बिना अर्थ समझाये बांधू राखी, नहीं-नहीं यह धोखा है।

भाई – सदियों से हम भारतवासी राखी बंधवाते आये हैं।
बहन की रक्षा फर्ज भाई का, रीति अपनाते आये हैं।

बहन – परमात्मा शिव परमधाम से सच्ची राखी लाए हैं।
इसकी एक अनोखी कीमत, क्या आप लेके आए हैं?

भाई – हाँ, यह लो इसकी कीमत
(जेब से दस रुपये निकाल कर देता है)।

बहन – नहीं भइया, मैं तो पूरे पाँच ही लूँगी।

भाई – ये लो पाँच (पाँच रुपये देता है)।

बहन – भइया, मैं इस जेब से नहीं, आपकी गुप्त जेब से लूँगी।

भाई – गुप्त जेब, कौन-सी गुप्त जेब?

बहन – भइया, आपकी आत्मा की गुप्त जेब में जो पाँच खोटे नोट हैं।
काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, वे ही मेरे उपहार हैं।

भाई – अरे, इनको देने से तो मैं संन्यासी बन जाऊँगा?

बहन – संन्यासी नहीं, आप विश्व महाराजन बन जायेंगे।

भाई – विश्व महाराजन! फिर तो जल्दी बांधो राखी।

बहन – भइया, दैवी गुणों को धारण कर बनना होगा मीठा।
बोलो, मंजूर है ना।

भाई – हाँ-हाँ जरूर मीठा बनूँगा, अब तो बाँधो राखी। (बहन भाई को तिलक लगाती है, राखी बांधती है, मुख मीठा कराती है)

भाई – आगमन तेरा मंगलमय हो, यह दिन कभी न भूलूँगा,
सदा रहूँगा शुद्ध-पवित्र, खुशियों में झूमूँगा।

बहन – बंधन बाँधा है तुमको, अब जीवन पवित्र बनाना है।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह के भूतों को भगाना है।
रक्षा प्रभु करते, जो इनका त्याग करते हैं।
वे हो जाते सदा अमर, प्रभु के दिल में रहते हैं।

ईश्वरीय उत्तराधिकार

* ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

इस संसार में तीन प्रकार के पिता हैं, एक है जानवर का पिता, दूसरा है मानव का पिता और तीसरा है परमपिता या जगतपिता अर्थात् सर्व का पिता। तीनों पिताओं की अपनी-अपनी सन्तान को उत्तराधिकार देने की अलग-अलग प्रणालियों पर यहाँ विचार करेंगे।

जानवर, पिता के रूप में

यहाँ हम जानवर शब्द का प्रयोग मानव से अलग सभी योनियों के प्रतिनिधि के रूप में कर रहे हैं। इन योनियों में पिता कोई विशेष कर्त्तव्य पूरा नहीं करता। जन्म देने के बाद बच्चे के लालन-पालन, संस्कार सिंचन आदि में उसकी कोई भूमिका नहीं होती। जन्म देकर उसे उसके हाल पर छोड़ देता है या फिर जैसे स्वयं कचरे में घूमता है या किसी मालिक की चाकरी करता है, इसी प्रकार के कार्य उसका बच्चा भी सीख जाता है। जब बच्चे को कुछ मिलता नहीं तो पिता के प्रति वह अहसानमन्द भी नहीं होता। उसके जीते जी उसके प्रति न तो कोई विशेष सम्मान प्रदर्शित करता है, न उसके जाने के बाद कोई यादगार सम्बन्धी कर्म करता है।

मानव, पिता के रूप में

दूसरा पिता है मानव का पिता जो अपने बच्चे के लिए बहुत कुछ करता है। लालन-पालन, संस्कार सिंचन के लिए अपना सारा समय, शक्ति, धन लगा देता है। खुद अभावों में रहकर भी बच्चे को भरपूर रखता है। खुद पढ़ा-लिखा न भी हो, तो भी जी-तोड़ मेहनत कर बच्चे को ऊँची पदवी दिला देता है। स्वयं झोपड़ी में रहकर भी बच्चे के लिए कोठी बनवा देता है और स्वयं फटे कपड़े पहनकर भी बच्चे के लिए सुख-साधनों को जुटाता है। शरीर छोड़ने के बाद या कई बार तो जीते जी भी सारी मेहनत की कमाई बच्चे को सौंप देता है। यदि पिता में कोई हुनर हो तो धन के साथ-साथ वह हुनर भी वर्से में बच्चे को मिल जाता है। अपने प्रति पिता के ऐसे त्याग और प्रेम को महसूस कर बच्चा भी रिटर्न में उसके पाँव छूता, नमस्कार करता, आज्ञा पालन करता, उसके जाने के बाद श्राद्ध कर्म करता और उसकी यादगार कायम रखने का भी पुरुषार्थ करता।

लौकिक पिता से प्राप्ति केवल एक जन्म के लिए

लौकिक पिता का त्याग महान है पर उसकी एक सीमा है। लौकिक पिता मात्र एक जन्म के लिए है तो उसके द्वारा प्रदान किया गया सुख भी एक जन्म तक ही चलता है। मान लीजिए, पिता की मेहनत के सहयोग से और अपनी लगन से पुत्र आई.ए.एस.(भारतीय प्रशासनिक सेवा) अधिकारी बन गया। उसके 25 वर्ष पढ़ने में गए, 28-30 वर्ष पद पर रहा, फिर सेवानिवृत्त हुआ। शरीर छोड़ने के बाद आत्मा इस पढ़ाई या पद – दोनों को साथ-साथ नहीं ले जा सकती। अगला जन्म उसका कहाँ होगा? वर्तमान में उसने कैसे कर्म किए, इस बात पर निर्भर होगा। यदि पद पर रहते और बाद में भी दुआएँ कमाई होंगी तो वो दुआएँ साथ जाएंगी और अगला जन्म उन दुआओं के बल से सुखकारी हो सकता है। पर यदि पद पर रहते दूसरों को अपने कर्मों से दुखी किया होगा तो अगला जन्म बहुत निकृष्ट भी हो सकता है।

इसी प्रकार पिता ने सुन्दर कोठी बनवाकर दी, उसमें भी वह कितने वर्ष रहेगा? जितनी शरीर की आयु होगी। यदि 80 वर्ष तक जीया तो तब तक उस कोठी का सुख भोगा, शरीर छोड़ने के बाद दुबारा इसमें नहीं आएगा। अगला जन्म झोंपड़ी में होगा या कोठी में, यह उसके पुण्य कर्मों की कमाई पर निर्भर होगा। कहने का भाव यह है कि शरीर का पिता, अपनी

शारीरिक सन्तान को कुछ भौतिक सुविधाएँ प्रदान कर सकता है जो उसी जन्म तक चलती हैं इसलिए उसकी देन सीमित है।

धन के साथ कई नकारात्मक चीज़ें भी वर्से में

लौकिक पिता के वर्से का एक अन्य पहलू भी है। वह केवल धन का वर्सा नहीं देता अपितु अपनी बीमारियों का वर्सा भी बिन मांगे प्रदान कर देता है। चिकित्सा क्षेत्र में रोग का पारिवारिक इतिहास बहुत मायने रखता है। पिता से पुत्र में, फिर उसके पुत्र में, इस प्रकार रोग पीढ़ियों तक चलता रहता है। रोग के अलावा पिता के स्वभाव का वर्सा भी पुत्र को सहज मिल जाता है। कई बार व्यसनी पिता के सारे व्यसन पुत्र में आ जाते हैं। यदि वह भ्रष्टाचार करता, लालची है, क्रोधी है, झगड़ालू है, कामी-विकारी है तो इन अवगुणों का वर्सा भी जाने-अनजाने बच्चे को मिल जाता है। यदि उसकी किसी से शत्रुता है तो वह भी पुत्र को वर्से में देकर कहता है, मैं अमुक व्यक्ति के घर 20 वर्षों से नहीं गया, तुमको भी उनसे मेलजोल नहीं करना है।

ऊपर हमने अधिकांश पर लागू होने वाले जो उदाहरण लिए वे इस बात को स्पष्ट करने के लिए हैं कि हद के पिता से प्राप्त उत्तराधिकार कई हदों में बंधा रहता है और उसके कई नकारात्मक पहलू भी हैं अत: पूर्ण सुख, असीमित सुख और सर्व नकारात्मक पहलुओं से मुक्त सदाकाल का उत्तराधिकार पाने के लिए पिताओं के भी पिता, परमपिता, बेहद के पिता, विश्व-पिता से नाता जोड़ना अनिवार्य है।

जीवन, शरीर छूटने के बाद भी है

लौकिक (शारीरिक) जीवन के लिए पिता का रोल बहुत ही महत्वपूर्ण है। शारीरिक पिता नहीं तो यह शरीर भी नहीं, यह अटल सत्य है परन्तु जीवन केवल वर्तमान तक सीमित नहीं है, केवल शरीर तक सीमित नहीं है। इस शरीर के बाद भी जीवन है, वर्तमान के बाद आगे भी जीवन है। वर्तमान के साथ-साथ उस आगे के जीवन की सुरक्षा, समृद्धि, उच्चता के लिए हमें शारीरिक पिता से भी ऊँचे पिता, सर्व के पिता, बेहद के पिता, परमात्मा पिता की ज़रूरत है। उनको जानना, उनसे सम्बन्ध जोड़ना और उनको याद करना ज़रूरी है।

शरीर और आत्मा के रचयिता अलग-अलग

जब कोई शरीर छोड़ता है तो हम उसकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। शरीर शान्त अपने आप हो गया, उसके लिए किसी ने प्रार्थना नहीं की पर आत्मा के लिए प्रार्थना की ज़रूरत है। शरीर सामने पड़ा है फिर भी हम कहते हैं, अमुक व्यक्ति चला गया। जब शरीर सामने है तो कौन चला गया? अवश्य ही उस शरीर को धारण करने वाला कोई चला गया। अत: स्पष्ट है कि शरीर अलग है और उसको धारण करने वाला अलग है। जब ये दो अलग-अलग सत्ता हैं तो इनके रचयिता भी अलग-अलग हैं। एक है शरीर को रचने वाला शरीर का पिता और दूसरा है आत्मा का पिता।

परमपिता से प्राप्त वर्सा पूरे कल्प के लिए

आत्मा के पिता को जानने से, उनसे सम्बन्ध जोड़ने से आत्मा को ऐसा उत्तराधिकार मिलता है जो जन्म-जन्म उसके साथ रहता है। शरीर छोड़ने पर भी उसके साथ जाता है। यह वर्सा है ईश्वरीय ज्ञान का, ईश्वरीय गुणों का और ईश्वरीय शक्तियों का। परमात्मा पिता स्वर्ग के मालिक हैं, रचयिता हैं अत: उन्हें जो है, जैसा है उसी रूप में जानने और याद करने से इस सृष्टि पर जितने समय स्वर्ग रहता है, उतने समय के लिए स्वर्ग का मालिक बनने का उत्तराधिकार मिल जाता है। स्वर्ग आधाकल्प अर्थात् 2500 वर्ष चलता है। इस अवधि के 21 जन्मों तक आत्मा स्वर्गिक गुण, धन, सम्बन्ध का वर्सा पा लेती है। लौकिक वर्सा एक जन्म का और अलौकिक वर्सा 21

जन्मों का। इसके साथ-साथ कल्प भर के 84 जन्मों तक भी ईश्वरीय वर्से की गुप्त प्राप्ति चलती रहती है। यही कारण है कि मनुष्य भगवान को याद करते, पूजा करते, तीर्थ यात्राएँ करते, उपवास करते, दान करते, उसका मन्दिर बनवाते और भी न जाने कैसी-कैसी कष्ट साध्य साधनाएँ करते इसीलिए कि उससे जो वर्सा पाया था वह लौकिक वर्से से कई गुणा ज्यादा था इसलिए उसके लिए जो भावपूर्ण साधना करते हैं वह भी लौकिक पिता के प्रति प्रदर्शित सम्मान से कई गुणा ज्यादा होती है।

परमपिता परमात्मा द्वारा दिया गया वर्सा जब बिल्कुल समाप्त हो जाता है तो पिता परमात्मा पुनः सृष्टि पर आकर अपने बच्चों को अपना परिचय देते हैं, अपने से सम्बन्ध जुड़वाते हैं और पुनः अगले कल्प के 21 जन्मों के लिए देवताई जीवन का वर्सा दे देते हैं, अभी वही समय चल रहा है। पिता परमात्मा धरती पर अवतरित होकर मानव आत्माओं को वर्से में भाग्य दे रहे हैं। यह पाने और गंवाने का क्रम सृष्टि चक्र में निरन्तर चलता रहता है। वर्तमान समय पाने का है, तो आइये इस समय का पूरा लाभ उठाएँ। ❖

दादी से मिला वरदान

ब्र.कु.किरण, महू

एक बार कोटा से मैं अपनी लौकिक माताजी एवं ओमप्रकाश भाईजी के साथ अव्यक्त बाबा से मिलन मनाने पाण्डव भवन पहुँची थी। उन दिनों 8-10 दिन मधुबन में रहना आम बात थी। आध्यात्मिक उन्नति के लिए, मुरली क्लास के पहले किसी भी नई कुमारी (जो टीचर बनने वाली हो) को, किसी भी तैयार विषय पर 10 मिनट सभा में बोलना होता था। शुरू से ही मैं संकोची स्वभाव की थी अत: कभी भी आगे आने की कोशिश नहीं करती थी। मैं भाषण करने से बचती रही परन्तु जिस दिन हमें वापस आना था उसी दिन प्रात: क्लास में मुझे बोलने के लिए रात्रि को ही प्रोग्राम मिल गया। सारी रात टेन्शन के मारे जागने में ही निकल गई। खैर, बाबा को याद करके प्रात: क्लास में संदल पर बैठी और जो भी तैयार किया था, सुनाया।

उस दिन दादी प्रकाशमणि जी तबीयत के कारण मुरली सुनाने नहीं आई थी परन्तु दीदी मनमोहिनी जी क्लास में बैठी थी। मुरली क्लास पूरी होने के बाद हमारी विदाई थी, दादी-दीदी दोनों ही बादाम-मिश्री देकर गो सून, कम सून कहकर विदाई करती थी। भाईजी व माताजी के बाद मेरा नम्बर आया तो दादी-दीदी के गले लगकर स्नेह से मेरे नयन गीले हो गये, आँसू बहने लगे। दीदीजी बोली, दादी देखो, सूखा संन्यासी गीला तो हुआ, आज सुबह इसने क्लास में जो सुनाया वह आपने सुना? दादीजी बोली, हाँ दीदी, मैंने सुना, इसने बहुत ही अच्छा बोला, आगे चलकर यह बड़ी-बड़ी सभाओं में भाषण करेगी। इसके बाद वर्षों तक इन्दौर ज़ोन में क्लब, सम्मेलन, सोसायटी इत्यादी में भाषण और सेन्टर्स पर भट्ठी क्लासेज कराती रही। जब भी कोई तारीफ करता, मैं कृतज्ञता से प्यारी दादीजी को ही सारा श्रेय देती। इस प्रकार दादी जी द्वारा दिया गया वरदान साकार होता रहा। ❖

मेरा प्यारा खुदा दोस्त

❊ ब्रह्माकुमार बलजीत, कपूरथला (पंजाब)

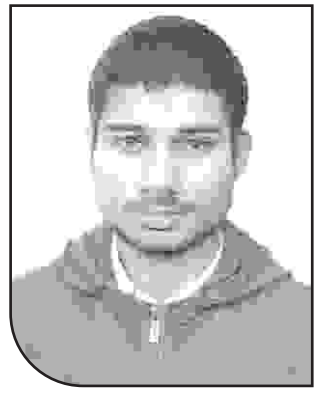

कभी अकेला उदास होके आसमान में टिमटिमाते तारों से पूछा करता था, क्या तुमने भगवान को देखा है, अगर देखा है तो मुझे भी दिखाओ। हँसा करते थे तारे मेरी मासूमियत पर। आज भी आँख भर आती है जब याद आते हैं वो पुराने दिन, तब मैं भगवान को ढूँढा करता था। शारीरिक जन्म सिख धर्म में हुआ, बचपन से ही पाठ-पूजा किया करता था। धीरे-धीरे मंदिर जाना शुरू किया और फिर जब बड़ा हुआ तो काफी समय तक चर्च में भी गया। चर्च में जाकर सुकून तो मिलता था लेकिन मन न टिक सका। फिर दिल में आया, क्यों ना मस्जिद में जाऊँ? एक बार एक दोस्त के साथ मस्जिद गया, मन वहाँ भी नहीं लगा। मस्जिद के बाहर पार्क में बैठके सोचने लगा कि क्यों कहते हैं लोग कि भगवान एक है। मैं जहाँ भी जाता हूँ, यही सुनता हूँ कि हमारा ही गुरु बहुत महान है।

भगवान के अनेक रूप सुनकर उलझ गया

एक बार मंदिर के पंडित जी से पूछा, पंडित जी, अगर भगवान एक हैं और वो राम हैं तो बाकी कौन हैं। पंडित जी ने कहा, भगवान बिल्कुल एक हैं लेकिन बाकी सभी उनके रूप हैं। अब तो और ही उलझ गया। ज़रा सोचिये, अगर आपके घर में दस बहनें हैं और आप पूछें कि माँ कहाँ हैं और आपको कह दिया जाये कि माँ भी तो औरत है और ये सभी भी औरत हैं तो जिसको मर्ज़ी माँ समझ लो, तो कैसा लगेगा? भले हर औरत माँ जैसी होती है लेकिन माँ तो माँ ही होती है!

मेरे कारण घर में लड़ाई

काफी दिनों बाद, उसी भगवान को माँ के रूप में ढूँढता हुआ एक बार फिर गुरुद्वारे में गया और ''गुटका साहिब'' लेके पाठ करने लगा। जब कुछ समझ में नहीं आया तो पाठी जी से पूछा, इसका अर्थ क्या है? पाठी जी क्रोध से बोले, हमें इसका अर्थ थोड़े ही पता होता है, आप पढ़े जाओ, जब भगवान की कृपा हो जायेगी तो खुद पता चल जाएगाा। एक बार फिर निराश होकर बैठ गया, भगवान से विश्वास उठने लगा और नास्तिक बन कर ऐसी संगत में पड़ गया जो जीवन को नष्ट कर रही थी। सारा दिन आवारा लड़कों के साथ घूमता था, अय्याशी करता था। स्कूल भी नहीं जाता था, न ही घरवालों की बात सुनता था, फलस्वरूप नौवीं क्लास में फेल हो गया। मेरे कारण हर रोज़ घर में लड़ाई होने लगी लेकिन मैं समझता था कि मैं जो कर रहा हूँ, ठीक है। मेरे घर वाले ही मुझे नहीं समझते।

कल्प पहले वाली 'माँ' मिल गई

अचानक एक दिन मुझे बुखार हुआ। चक्कर आने पर पता चला कि वो टायफाइड है। डाक्टर ने मुझे आराम करने के लिए बोला इसलिए घर में लेटा रहता था और टी.वी. देखता रहता था। अचानक एक दिन टी.वी. पर ''अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़'' कार्यक्रम देखा। पता देखकर आश्रम जाने का सोचा और अगले दिन सुबह ठीक आठ बजे घर से निकला एकदम सजधज के साथ। मन में वही पुराने संस्कार थे कि जाकर मन का मनोरंजन करके आ जायें। जैसे ही सेवाकेन्द्र पहुँचा, घंटी बजायी, एक बहन ने दरवाज़ा खोला। उनको देखते ही डर गया क्योंकि

अक्सर जब सूर्य की किरणें अंधकार पर पड़ती हैं तो अंधेरा डर जाया करता है। बहन के साथ जब अन्दर रूम में गया, एक दिव्य प्रकाश ने मुझे खींच लिया। नहीं पता था कि वही कल्प पहले वाली बिछुड़ी हुई माँ हैं, ''मम्मा'' हैं। बहन ने आत्मा का ज्ञान देकर जैसे ही परमात्मा का परिचय दिया तो शब्दों में बयान नहीं कर सकता वो पल। खुशी के आँसू थमे नहीं, ऐसे लग रहा था जैसे आज सब कुछ मिल गया। मन में संतुष्टि का अनुभव हो रहा था। नहीं भुला सकूँगा कभी दस जून का वो दिन जब मेरा खुदा दोस्त मुझे मिल गया। कहते हैं, किसी चीज़ को पूरे दिल से चाहो तो पूरी कायनात तुम्हें उससे मिलाने की कोशिश में लग जाती है। आज मुझे ढाई साल से अधिक समय हो गया इस ईश्वरीय ज्ञान में चलते हुए और ऐसा परिवर्तन हुआ है कि लोग मेरा मिसाल देते हैं। शुक्रगुज़ार हूँ उस खुदा दोस्त का जिसने मुझे अपनाया।

भगवान का ज्ञान यहीं है

मैं अपने सभी युवा भाई-बहनों को बस यही बताना चाहता हूँ कि मैं यहाँ आकर कोई साधु-संत नहीं बना और न ही हँसना-खेलना छोड़ा है। मैं अभी भी पढ़ाई कर रहा हूँ और राष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी भी हूँ। बस हरदम खुदा दोस्त साथ रहता है इसलिए कुछ गलत होता ही नहीं। अब सच में जिन्दगी जीने का मज़ा आ रहा है। मेरा दृढ़ निश्चय है कि अगर भगवान का ज्ञान इस दुनिया में है तो वो यहीं है। साथ ही युवा भाई-बहनों को निमंत्रण देता हूँ कि आओ, मेरे प्यारे खुदा दोस्त के संग मिलकर एक संगठन तैयार करें जो पूरे विश्व को बदल डाले।

अब मैं तारों से कहता हूँ कि खुदा दोस्त से मिलना हो तो आ जाओ नीचे क्योंकि वो मेरे दिल के सिवाय कहीं नहीं रहता, वो धरती पर आ चुका है! ❖

सुन्दर राखी

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

इक धागा पवित्रता का, सुरक्षा दूजे में समाई,
सुख-शान्ति की यह राखी परमपिता के घर से आई,
मेरे भाई मैं यह सुन्दर राखी लाई।
करे निर्बन्धन, इस बन्धन में निहित सबकी भलाई।।

यह रक्षाबन्धन है भगिनी-सुरक्षा प्रबन्धन,
बनावे पवित्रता-दिव्यता और 16 कला सम्पन्न,
आ सके मैदान में दृढ़ता से चाहिए ऐसी कलाई,
मेरे भाई मैं सुन्दर राखी लाई।

जिस ''कर'' ने सदा श्रेष्ठ कर दिखाया,
सदा हाथ थाम के जिसने नारी का मान बढ़ाया,
जिसमें बेहद के परोपकारी जीवन की झलक हो,
निरन्तर प्रकाशी त्रिनेत्री अपलक जिसकी पलक हो,
जिस मस्तक में जगमग सितारा आत्मा हर्षाई।
उसके लिए मैं विश्वकल्याण पिरो के लाई।
परमपिता के घर से मैं सुन्दर राखी लाई।।

यह निमन्त्रण है प्यार का, शुभ सम्बन्धों के इज़हार का,
कायदों के वायदे निभाने के इकरार का,
शुद्ध बुद्धि की थाली, सत्भावों के हाथ,
मन भी मीठा हो, मुख के मीठेपन के साथ,
मैं ऐसी दिलखुश मिठाई लाई, मैं ऐसी सुन्दर राखी लाई।
मेरे भाई यह परमपिता के घर से है आई।।

वैश्विक प्रेम के प्रतीक '**रक्षाबंधन पर्व**' तथा सतयुगी दुनिया के महाराजकुमार श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव '**जन्माष्टमी**' पर्व की पाठकगण को कोटि-कोटि बधाइयाँ

स्वराज्य से ही रामराज्य

❊ ब्रह्माकुमारी कोमल, बराड़ा (अम्बाला कैन्ट)

कहा गया है, 'पराधीन सपनेहु सुख नाही' अर्थात् पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता। अधीनता चाहे व्यक्ति की हो, वस्तु, वैभव की हो या फिर अपने ही बुरे स्वभाव, संस्कार या आदतों की, दुखदाई ही होती है। हमारा देश भारत भी लंबे समय तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। अंग्रेजों के शोषण से भारत की हालत बहुत दयनीय हो गई। अपने ही देश, अपनी ही जमीनों पर लोग गुलाम और बंधुआ बनकर रह गए। पराधीनता में सबको अपना जीवन अभिशाप लगने लगा। भारत जो सोने की चिड़िया था, वह पत्थर की चिड़िया बन गया।

स्वतन्त्रता ने दिलाया उन्नति का शिखर

हमारे देशभक्त भाई-बहनें अपने अनमोल जीवन की कुर्बानी देकर हमें अंग्रेजों के शोषण और गुलामी भरे जीवन से मुक्त कराने में सफल रहे। ऐसे देशभक्तों को आजादी के 67 वर्ष पूरे होने पर कोटि-कोटि नमन। स्वतन्त्रता के बाद भारत देश कई क्षेत्रों में प्रगति कर स्वनिर्भर हुआ है। वैज्ञानिकों ने सिर्फ सोचने मात्र से चलने वाले यन्त्रों की खोज कर ली है। डॉक्टरों ने भी कृत्रिम रूप से साँस देकर व्यक्ति को जिंदा रखने की तथा अन्य कई भयंकर बीमारियों के इलाज की थैरेपी खोज ली है। कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्र में भी उत्पादन वृद्धि कर भारत स्वनिर्भर हुआ है। शिक्षा का अधिकार भी हरेक वर्ग, जाति के स्त्री, पुरुष को प्राप्त हुआ है।

आजादी के बाद भी हैं सभी गुलाम

इतनी सब प्राप्तियों के बावजूद मन में प्रश्न उठता है कि क्या वास्तविक रूप से आज हम स्वतन्त्र हैं? क्या हम उन्नति के शिखर पर पहुँचे हैं? तो सहज ही बुद्धि उत्तर देती है कि नहीं? औद्योगिक उन्नति और कृषि उन्नति के बावजूद भी महँगाई आसमान छू रही है। सामान्य व्यक्ति को पेट भरना भी दूभर हो गया है। वह तो अभी भी अपने भूखे पेट के बंधन में है। हम स्वतन्त्र तो हुए परन्तु अधिकतर लोग अभी भी लोभ के बंधन में बंधकर सामान्य जनता का खून चूस रहे हैं। काम के अधीन होकर आज भाई-बहन, शिक्षक-विद्यार्थी, पिता-बेटी का पवित्र रिश्ता भी अपवित्र होता जा रहा है। आज स्त्री बाहर तो क्या अपने ही घर में सुरक्षित नहीं है। मोह के मकड़ी जाल में फँसे मात-पिता, गांधारी और धृतराष्ट्र की तरह आँखों पर पट्टी बाँधकर अपने बच्चों के गलत कार्यों को भी आश्रय देते हैं। क्रोध के अधीन होकर भाई, भाई को, पति, पत्नी को तथा पुत्र, पिता को भी मारने से नहीं चूकते। छह फुट का इंसान छोटी-सी दो इंच की बीड़ी, 15 इंच की शराब की बोतल के अधीन है। छोटे से लेकर बड़े तक हरेक व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, बदले की भावना और आलस्य के पंजे में जकड़ा हुआ आज भी अपना और दुनिया का शोषण कर रहा है।

आधुनिक रावणराज्य

बापू गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के बल पर भारत देश को रामराज्य बनाने का सपना देखा था। परन्तु, आज रामराज्य की बजाय रावणराज्य ही चारों तरफ दिखाई देता है। रावण के बारे में गायन है कि वह बहुत विद्वान, ज्ञानी था, उसने पाँचों तत्वों को चारपाई के पांवों से बाँध रखा था। आज का मनुष्य भी शास्त्रों का ज्ञान, शरीर से लेकर चाँद, तारों

तक का ज्ञान प्राप्त कर चुका है, बहुत विद्वान बन गया है। प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी उसने अपने वश में कर लिया है। बटन दबाते ही अग्नि, जल, वायु, हाज़िर हो जाते हैं। आकाश तक भी पहुँच गया है। परन्तु इस आधुनिक रावणराज्य में भी रोज़ सीताओं का अपहरण हो रहा है, कई अग्नि पर बलि चढ़ रही हैं। गांधी जी का रामराज्य का सपना मात्र सपना ही रह गया है। कैसे साकार होगा यह सपना?

रामराज्य अर्थात् श्रेष्ठाचारी राज्य

रामराज्य अर्थात् सतयुग, त्रेतायुग में सभी यथा राजा-रानी तथा प्रजा सम्पूर्ण निर्विकारी, पावन, श्रेष्ठाचारी थे। सारे विश्व पर श्री लक्ष्मी, श्री नारायण तथा श्री सीता, श्री राम का ही राज्य था। उस अटल, अखण्ड, निर्विघ्न राज्य के बारे में ही गायन है कि वहाँ घी, दूध की नदियाँ बहती थीं, शेर-गाय भी एक ही घाट पर पानी पीते थे। सोने, हीरे के महलों में निवास होता था। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक ही कुल होता था। सबको समानता का अधिकार प्राप्त था। सब सुखी, सम्पन्न, स्वतन्त्र थे। रामराज्य में भारत सोने की चिड़िया था। सभी मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म थे। एक कवि ने कहा है –

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा,
रामराज्य काहु नहीं व्यापा

वास्तविक पराधीनता है रावण की

भारत को विदेशी (अंग्रेजी) राज्य से आज़ाद कराने में तो बापू गांधी जी सफल रहे परन्तु एक अदृश्य शत्रु रावण इस भारत देश का पिछले 2500 वर्षों अर्थात् द्वापरयुग, कलियुग से राज्य हड़पके बैठा है जिसने ही परमधाम निवासी आत्माओं की मूल सम्पत्ति – ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति को छीन लिया है। आत्मा को एकदम कंगाल, दुखी बना दिया है। वास्तविक पराधीनता तो रावण (माया के पाँच विकारों) की ही है। आज संसार की हर समस्या चाहे वह व्यक्तिगत हो, सामाजिक हो, राष्ट्रीय हो, अन्तर्राष्ट्रीय हो सबका मूल कारण यह माया रावण का राज्य ही है। इस रावण के राज्य को खत्म करने से ही सच्ची स्वतन्त्रता मिलेगी।

बेहद का बापू शिवबाबा हम सच्चे देशभक्तों के द्वारा इस संगमयुग पर ''पवित्र बनो, योगी बनो'' का नारा देकर इस भारत देश को उस गुप्त शत्रु से मुक्त करा रहे हैं। उस द्वारा छीनी गई सुख-शान्ति की सम्पत्ति को वापिस हमें दिला रहे हैं। इसका राज्य समाप्त कर बेहद का स्वराज्य अर्थात् रामराज्य स्थापित कर रहे हैं। बाह्य रीति से तो रावण के पुतले को अनेक वर्षों से जलाते आए परन्तु परमात्मा की श्रीमत है कि अब योगाग्नि से इस रावण को जलाना है।

सच्ची उन्नति है मनजीत बनने में

रावण की नाभि पर तीर लगाने से ही उसकी मृत्यु हुई थी। नाभि अर्थात् देह अभिमान। देह अभिमान को मारकर स्वयं को आत्मा समझेंगे तभी रावण के दस शीशों (पाँच विकार स्त्री के, पाँच विकार पुरुष के) का नाश होगा अन्यथा एक के बाद दूसरा, फिर तीसरा विकार रूपी शीश तंग करता रहेगा। सच्चे स्वराज्य की स्थापना के लिए स्व को अर्थात् आत्मा को जानकर, उसके स्वधर्म तथा गुणों को पहचान कर ही हम अपनी कर्मेन्द्रियों तथा सूक्ष्म इंद्रियों मन, बुद्धि, संस्कार पर राज कर सकते हैं। स्वराज्याधिकारी आत्मा को कोई व्यक्ति, वस्तु, वैभव, पुराना स्वभाव, संस्कार यहाँ तक कि प्रकृति के पाँच तत्व भी अधीन नहीं कर सकते, यही सच्ची स्वतन्त्रता है। इससे ही भारत देश फिर से भरपूर, खुशहाल, सोने की चिड़िया बन सकता है। सच्ची उन्नति तभी होगी जब हम मनजीत बनेंगे। आइये मिलकर गाएँ –

मेरा भारत देश महान,
जहाँ आते शिव भगवान।
जहाँ से होता सबका कल्याण,
है सबका यह तीर्थ स्थान।।

भगवान का साथ हर पल

चन्द्रिका बहन पटेल, सिद्धपुर (गुजरात)

मेरा जन्म भक्ति-भाव वाले परिवार में हुआ। मैं भी बाल्यकाल से ही पूजा, पाठ, व्रत, नियम आदि बहुत श्रद्धापूर्वक करती थी। संयुक्त परिवार में पली-बढ़ी इसलिए अकेले रहना अच्छा नहीं लगता था। शादी बहुत अच्छे परिवार में हुई लेकिन जब वहाँ बँटवारा हुआ और मुझे सास-ससुर तथा देवरानी से अलग रहना पड़ा तो अकेला-पन महसूस होने लगा और अन्दर ही अन्दर दुखी रहने लगी।

खुशी का ठिकाना नहीं रहा

इसी बीच हमारे गाँव में ब्रह्माकुमारीज की ओर से राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। मैं भी ज्ञान सीखने जाने लगी। जैसे ही मुझे परमात्मा पिता का सत्य परिचय मिला, मैं क्या बताऊँ, मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। मेरे जीवन की दिशा बदल गई। मेरे विचार, व्यवहार, मेरा हर कर्म श्रेष्ठ हो गया। अकेला-पन खत्म हो गया। जिसे भक्ति में अनेक रूपों में ढूंढ़ती थी उसने स्वयं अपनी सत्य पहचान बताई, मेरे तो भाग्य के द्वार ही खुल गए।

योग का प्रयोग

अच्छे मार्ग पर चलने में विघ्न भी बहुत आते हैं। मेरे युगल मुझे मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनने जाने में बाधा डालने लगे। मैं डरते-डरते मुरली सुनने जाती रही और योग का प्रयोग करती रही। अमृतवेले बापदादा के सामने अपने युगल को इमर्ज कर उन्हें पवित्रता, सुख, शान्ति की किरणें देने लगी। सारा दिन भी शुभ संकल्पों के प्रकम्पन देने लगी। बाबा की सम्पूर्ण याद में बना हुआ और भोग लगाया हुआ भोजन उनके टिफिन में भरकर देने लगी। बाबा की थाली का सारा प्रसाद उन्हें ही दे देती थी। इस प्रयोग के नौवें दिन जब वो शाम को घर आए तो कहने लगे, आज खाना अभी नहीं खाऊँगा, पहले मुरली सुनने ले चलो, आज के बाद मैं भी हर रोज़ तुम्हारे साथ मुरली सुनने जाया करूँगा। उस दिन से लेके उन्होंने कभी मुरली मिस नहीं की है। बाबा की याद से मेरा सबसे बड़ा बन्धन आठ दिनों में ही समाप्त हो गया।

परिस्थिति में बाबा ने निभाया साथ

मैंने अपना जीवन-साथी भगवान को बना लिया। सुबह से लेकर रात तक हर कर्म बाबा की याद में करने लगी। बाबा के साथ के अनुभव से अकेलेपन का अहसास समाप्त हो गया। एक दिन मैं अकेली खेत में

चली गई। खेत के आस-पास कोई नहीं था। काम करते-करते दोपहर का एक बज गया। मन में घबराहट-सी होने लगी। सुनसान वातावरण में बाबा से बातें करती रही। इतने में मेरी नज़र दूर से आते दो भाइयों पर पड़ी। मुझे तसल्ली हुई कि चलो, दो भाई तो यहाँ हैं परन्तु जैसे-जैसे वे मेरी तरफ बढ़ते गए, मुझे उनसे नकारात्मक वायब्रेशन आने लगे और मेरी घबराहट और बढ़ गई।

मैंने सुना, वे आपस में कह रहे थे, देखो, यहाँ खेत में यह अकेली ही है। मैं ज्यादा घबरा गई और बाबा से बातें करना चालू कर दिया। वैसे भी हर कर्म में बाबा को याद करने का मेरा अभ्यास है। बाबा ने तुरन्त मुझे टच किया, बच्ची, सूक्ष्मवतन से ब्रह्माबाबा का भी आह्वान करो। मैंने बापदादा दोनों का आह्वान किया कि मेरे साथी, मेरे रक्षक आ जाओ।

जैसे ही वे दोनों मेरे नज़दीक आए, उनकी आँखें फट गई और वे आपस में कहने लगे, यहाँ यह अकेली नहीं है, सफेद ड्रेस वाला बूढ़ा भी यहाँ बैठा है। बाबा पर नज़र पड़ते ही वे भाग गए। मैं बापदादा को सामने पाकर खुश हो गई। बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, बच्ची, हर कार्य में बाबा तुम्हारे साथ है।

यह दृश्य थोड़ी देर बाद मर्ज हो गया लेकिन मेरे दिल-दिमाग पर छप गया है। कमाल है भोलेनाथ की! दिल से यही निकलता है, जिसका साथी है भगवान, उसे क्या रोके आंधी-तूफान। ❖

दादी ने सिखाया अनुशासन

ब्रह्माकुमारी रानी, मुजफ्फरपुर

प्राणप्यारी, मनहरणी, आदरणीया दादी जी के स्मृति दिवस के समीप आते ही उनकी यादें भी साकार रूप लेकर सामने आने लगती हैं।

जितना दादी से प्यार था उतना ही डर भी था कि कोई ऐसा कर्म न हो जाए जो उनकी नज़रों से गिर जाएँ। दादी ने अपने जीवन से अनुशासन सिखाया। उनकी दिनचर्या अनुशासन बद्ध थी, हर कार्य एक्यूरेट होता था। वे रात को दो बजे उठकर बाबा को याद करती थी। एक बार दादी ने सुनाया कि रात को बाबा मेरे पास आए, कई दिशा निर्देश दिए, फिर मैंने बाबा का विशाल रूप देखा, इतना ऊँचा, बड़ा बाबा जो मैं देखती ही रह गई!

जितनी आप मधुरता की मूरत थी उतनी ही ईश्वरीय नियमों और मर्यादाओं पर चलाने अर्थ शक्ति भरने वाली थी। सभी यज्ञ-रक्षक यज्ञ-वत्सों को आप यह अनुभव कराती थी कि ईश्वरीय नियम और मर्यादाएँ ही स्वयं की और सर्व की रक्षा कर सकते हैं। आप कड़ी नज़र से देख कर बचाती भी थी और नज़र से निहाल कर सम्भालती भी थी। आपकी सिखाई हुई मर्यादाएँ सभी की सदा रक्षा करती रहें, यही शुभ कामना है। ❖

दिव्य गुणों की खान दादी

ब्रह्माकुमार वेदप्रकाश,
खतौली (उ.प्र.)

प्रभु की अनमोल रतन वो,
दिव्य गुणों की खान थी।
सदा शिव के महायज्ञ में,
उनकी अलग पहचान थी।।

सन् 37 में किया पदार्पण,
सब कुछ किया प्रभु को अर्पण।
ब्रह्मावत्सों को मिला हो जैसे,
दिव्य और अलौकिक दर्पण।।

असम्भव को सम्भव कर देती,
हर समस्या का समाधान बनी।
स्व और विश्व कल्याण की,
अद्भुत दिव्य मिसाल बनी।।

आज्ञाकारी और लगनशील थी,
कुशल प्रशासिका और सुशील थी।
सूक्ष्म हो या स्थूल सेवा,
सब में ही वो प्रवीण थी।।

आओ मिलकर उन महान का,
हम सब आह्वान करें।
कदम-कदम पर फालो करके,
दिल से हम सम्मान करें।।

अलौकिक प्रेम की पालना

✲ ब्रह्माकुमार सुरेश कुशवाहा, भिलाई

एक विराट व्यक्तित्व, महानता की पराकाष्ठा, निर्मल प्रेम का अलौकिक, अजस्त्र झरना, सहज व सरल जीवन, पवित्रता की मूरत, सबको सदा आगे बढ़ाने की उत्कृष्ट भावना, सबका स्थूल व सूक्ष्म ध्यान रखने वाली, उमंग-उत्साह की बादशाह – ऐसी थी हमारी दादी माँ। हमने ब्रह्मा बाबा व मातेश्वरी जगदम्बा माँ की अलौकिक पालना के बारे में सुना-पढ़ा था लेकिन दोनों की संयुक्त पालना का स्वरूप दादीजी में प्रैक्टिकल देखा। चाहे छोटा, बड़ा, किसी भी पद, जाति, धर्म वाला हो, दादीजी का निश्छल प्रेम छलकता रहता था। साकार में भी जैसे बच्चों के लिए माँ का जीवन होता है वैसे ही हम बच्चों की उन्नति, उमंग-उत्साह, खुशी ही दादी माँ का जीवन था। उनको कभी निराश, उदास तो किसी ने देखा ही नहीं। पूरे विश्व में हज़ारों सेवाकेन्द्रों का संचालन करते हुए भी वे सदा निश्चिंत रहती थीं। वे सदा यही कहती थीं – परमात्मा (शिवबाबा) करा रहा है, मैं निमित्त हूँ। उनकी मातृत्व भरी पालना के हम लाखों बच्चे साक्षी हैं।

सन् 1997 में हम 18000 भाई-बहनें परमात्म मिलन हेतु पहुँचे हुए थे। प्रथम दिन से ही सबकी नज़रें दादीजी को खोज रही थीं लेकिन दादीजी स्टेज पर आई ही नहीं। अगले दिन दादीजी हरा एप्रेन (हास्पिटल की ड्रेस) पहने दो बहनों के सहारे धीरे-धीरे स्टेज पर आईं। सबने करतल ध्वनि से दादीजी का स्वागत किया व ड्रेस देखकर आश्चर्य भी किया। फिर दादीजी ने ही सुनाया कि दादी का छोटा-सा ऑपरेशन हुआ है। डॉक्टरों ने कुछ दिन विश्राम के लिए कहा था लेकिन आप बच्चों के स्नेह में दादी से यहाँ मिलने आये बगैर रहा नहीं गया। फिर दादी बाबा के दो वरदानी बोल सुनाकर अपने वरदानी हस्तों से वरदान लुटाते, मिलन मनाते धीरे-धीरे चली गई। आज 16 वर्षों बाद भी यह दृश्य भूलाये नहीं भूलता। हम बच्चों से इतना प्यार जो अपने शरीर का भी ख्याल नहीं किया। कैसे न मिलें भगवान की व सर्व की दुआएँ उन्हें।

ऐसे ही मैंने देखा कि बाबा की सीज़न में दादीजी रोज़ प्रात: मुरली जरूर सुनाती थी। मुरली सुनाते समय वे बच्चों में बाबा की शिक्षाओं व सेवाओं प्रति उमंग-उत्साह भर देती थी। अंत के वर्षों में तबीयत धीरे-धीरे खराब होने पर भी कैसे भी तैयार होकर मुरली के बीच में या वरदान सुनाने के पूर्व पहुँचकर कुछ प्वाइंट ज़रूर सुनाती थीं। बाबा, मुरली व बाबा के बच्चों से उनका अपार स्नेह था। शरीर कमज़ोर हो जाने पर थोड़ा भी बोलने पर उन्हें खाँसी आ जाती थी लेकिन गोली खाकर व पानी पीकर भी कुछ मुरली ज़रूर सुनाती थी व मुरली के अंत में 'आँखों में बाबा तेरी.....' गीत पर बाँहों को फैलाकर रास करती थी व करवाती थी। सभी का अनुभव था कि पूरी मुरली सुनकर जो खुशी व शक्ति की प्राप्ति होती थी, वैसी ही प्राप्ति उस गीत में दादी को रास करते देखकर होती थी। दादी को देख सभा में उपस्थित सभी लोग प्रभु-प्रेम में झूमने लगते थे चाहे वे कितने भी बुजुर्ग हों। उमंग-उत्साह की अद्भुत तरंगें सबके अंदर प्रवाहित हो जाती थीं। शरीर में थोड़ा-सा भी बल होने पर वे व्हील चेयर पर बैठकर सभा में पहुँच जाती, भले डॉक्टरों ने कितना भी मना किया हो।

ब्रह्मा बाबा, मम्मा जैसे उन्होंने अपने अंतिम समय तक दातापन का पार्ट बजाया व सेवायें की। दादी माँ वास्तव में बाबा की सपूत, आज्ञाकारी, वफादार व दिलतख्तनशीन बच्ची थी। जिन लोगों ने साकार बाबा व मम्मा को नहीं देखा उनके लिए दादी जी महान् पथ-प्रदर्शक थी व आज भी हैं। आज भी उनकी दिव्य अलौकिक पालना का अव्यक्त अनुभव हम करते हैं। ऐसी आत्मा को कोटिश: नमन। ❖

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर खुशख़बरी

जन्माष्टमी का दिन बहुत शुभ है क्योंकि इस दिन स्थान-स्थान पर सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, वैकुण्ठनाथ श्रीकृष्ण की चर्चा होती है। भारतवासियों को श्रीकृष्ण बहुत प्रिय है क्योंकि उसकी चरित्र-चर्चा और उसका कार्य-व्यवहार बहुत पवित्र और मन को लुभाने वाला था। उसकी हर्षितमुखता, कंचन काया, शीतल स्वभाव सबके मन को मोहने वाले थे। माताओं को उसका सतोगुण प्रधान किशोर रूप तो बहुत ही भाता है। भक्त भी चाहते हैं कि वैकुण्ठ में उसके साथ रास रचाएँ। कन्याएँ जब उसका नाम सुनती हैं तो उनके रोम-रोम में उसकी याद जाग उठती है। भारत में जितने चित्र श्रीकृष्ण के हैं, उतने शायद ही किसी अन्य देवता के होंगे। आज अधर्म, अमर्यादा और अशान्ति के समय भारतवासी पुन: श्रीकृष्ण का आह्वान कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने पहले कभी श्रीकृष्ण (श्रीनारायण) के राज्य में अपार सुख-शान्ति पाये थे।

श्रीकृष्ण कहाँ है?

यह एक साधारण बात है कि जब किसी को किसी से प्रीति होती है तो वह अपने प्रेम-पात्र को जानता अवश्य है। अत: प्रश्न यह है कि क्या श्रीकृष्ण-प्रेमियों को मालूम है कि श्रीकृष्ण अब कहाँ और किस रूप में हैं? कृष्ण का वैकुण्ठ धाम कहाँ है? यदि वर्तमान समय श्रीकृष्ण प्रत्यक्ष होगा तो किस रूप में? कहीं ऐसा तो नहीं कि श्रीकृष्ण किसी गुप्त रूप में, गोपी-वल्लभ भगवान की गोप-गोपियों के साथ अलौकिक चरित्र कर रहा हो और जब वह अपनी लीला समेट कर अपने वैकुण्ठ धाम को लौट जाए तो श्रीकृष्ण-प्रेमियों को पश्चाताप करना पड़े कि ''हाय रे छलिया, हम तो तुम्हारे साधारण रूप और गोपनीय चरित्रों से छले गये! हमने तुमको देखा भी पर अपने अज्ञान के कारण तुमको पहचान न सके!'' कहते भी हैं, पता नहीं किस रूप में नारायण मिल जाये। इस लोक-कहावत से भी मालूम होता है कि पहले भी कभी श्रीकृष्ण अथवा श्रीनारायण साधारण रूप में प्रत्यक्ष हुए थे। अत: प्रीति की रीति तो यही है कि जो व्यक्ति गोप अथवा गोपी बन अतीन्द्रिय सुख प्राप्त करना चाहते हैं वे श्रीकृष्ण का तथा उस अव्यक्तमूर्त भगवान का परिचय प्राप्त करें जो सुदामाओं का खुदा-दोस्त है, उद्धवों जैसे सखा-सेवकों को ज्ञानरत्नों से माला-माल करने वाला है और अर्जुन जैसे जिज्ञासुओं को नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा बनाने वाला है। भगवान को जानने के बाद ही तो उनके रचे हुए वैकुण्ठ जा सकेंगे।

श्रीकृष्ण के लिए पवित्रता अपनाएँ

वैकुण्ठ में देवता निवास करते हैं। आसुरी गुण, कर्म, स्वभाव वाला कोई भी वहाँ जा नहीं सकता। वैकुण्ठनाथ श्रीकृष्ण तो सम्पूर्ण निर्विकारी, सोलह कला सम्पूर्ण, सतोगुणी था। इसलिए, यदि किसी को सचमुच कृष्ण से प्यार है और यदि कोई उसके वैकुण्ठधाम जाना चाहते हैं तो उन्हें भी अवश्य मन-वचन-कर्म की पवित्रता धारण कर लेनी चाहिए और जिस गीता ज्ञान तथा राजयोग की धारणा द्वारा श्रीकृष्ण को कृष्ण पद प्राप्त हुआ, वह ज्ञान और योग भी अवश्य जीवन में उतार लेना चाहिए। ❖

राजयोग बनाम चिकित्सा विज्ञान

* ब्रह्माकुमारी गायत्री, हरदा (म.प्र.)

मैं पिछले 17 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान से जुड़ी हुई हूँ। जब मेरा बेटा 2 वर्ष का था, वह असामान्य तरीके से लगातार भागता रहता था। उस पर नियंत्रण रख पाना अत्यन्त कठिन था। साथ ही ना वह बोल पाता था और ना ही हमारी कोई बात समझ पाता था। ई.एन.टी.डाक्टर ने सलाह दी कि इसे ऑटिस्टिक सेंटर के डाक्टर को दिखलायें। वहाँ जाने पर पता चला कि हमारा बेटा एक ऑटिस्टिक एवं हाईपर एक्टिव पेशेंट है।

ऑटिस्टिक का अर्थ है कि रोगी देखता है, सुनता है, खाता है किन्तु क्या देखता है, क्या सुनता है, क्या खाता है, इन सब बातों का उसे भान नहीं होता। बच्चे की पांचों कर्मेन्द्रियों में कोई संवेदनशीलता नहीं थी। डाक्टर ने कहा, यह कभी ठीक नहीं हो सकता है। इसे पूरी जिन्दगी एक ऑटिस्टिक सेंटर में रखना होगा। आम बच्चों की तरह ना ही यह पढ़ सकता है और ना ही बोल सकता है। इसे इसकी मातृभाषा में ही कुछ समझाया जा सकता है। साथ ही इसका हाईपर एक्टिव होना और अधिक समस्यात्मक है जिसके कारण यह एकाग्र नहीं हो पाता है एवं किसी से नज़र भी नहीं मिला पाता है।

मेरे लिये यह दिल दहलाने वाला सदमा था किन्तु मैं रोई अथवा घबराई नहीं। मेरा भगवान में अटूट विश्वास है इसलिये मैंने हिम्मत के साथ बेटे की इस बीमारी को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। अन्तरात्मा ने कहा, डाक्टर भगवान नहीं होता पर मेरे साथ तो भगवान की शक्ति है। इसलिये दृढ़ निश्चय और ईश्वर की शक्ति से बेटा ज़रूर ठीक होगा।

मैंने युद्धस्तर पर सारी तैयारियाँ की। वाचा एवं व्यवहार चिकित्सक से परामर्श लेकर उन निर्देशों के अनुसार उसका ध्यान रखती। प्रतिदिन अमृतवेले मेडिटेशन में भगवान अपनी शक्तियाँ देते और पूरे दिन मैं बेटे के साथ भागती रहती। इस बीच जो भी रिश्तेदार व संबंधी उसे देखने आते, एक ही बात कहते, इसका ठीक होना बहुत मुश्किल है। चारों ओर से निराशाजनक बातों के बाद भी अंदर से एक आवाज़ आती, मेरी बच्ची, हिम्मत मत हारो, पूरी कोशिश करो।

मैंने भगवान पर अपने निश्चय को कभी टूटने नहीं दिया और अपने प्रयास को दृढ़ता के साथ जारी रखते हुए तेल, नमक, हल्दी, मिर्च, काफी, चाय, शक्कर का त्याग तब तक के लिए कर दिया जब तक कि वह ठीक नहीं हो जाता। लगातार 5 वर्षों की दिन-रात की तपस्या रंग लाई और मेरी खुशी का ठिकाना न रहा जब उसमें पहला परिवर्तन दिखा। मेरी विजय मुझे दिखाई देने लगी। फिर वह दिन भी आया जब वह पूरी तरह ठीक ही नहीं हुआ बल्कि एक असाधारण बालक बन गया। आज वह तीन भाषाएं बोलता, लिखता व समझता भी है। इस कठिन परीक्षा में भगवान ने मुझे अपनी शक्तियाँ देकर मास्टर सर्वशक्तिमान बना दिया। मैंने आत्मा की शक्ति, शान्ति व सुख को गहराई से अनुभव किया और परमात्मा के प्रति मेरा प्यार स्वाभाविक रूप से बढ़ता चला गया क्योंकि जो बिल्कुल असंभव था वह संभव हो गया। आज भगवान के आशीर्वाद से मेरा बेटा दक्षिण भारत के एक स्कूल में छठवीं क्लास में पढ़ता है और हॉस्टल में रहता है।

मुझे अब ज़िंदगी में कुछ नहीं चाहिए क्योंकि मैंने भगवान को पा लिया है और उसे पाने के बाद कुछ भी पाना शेष नहीं रहता। यह सब कुछ संभव हुआ है प्रतिदिन अमृतवेले के मेडिटेशन के बल एवं भगवान में अटूट निश्चय से। ❖

सार्वभौमिक बंधुत्व का आधार मित्रता

❊ ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

मित्रता व शत्रुता बराबर वाले से ही करनी चाहिए, ऐसा समाज कहता है। मित्रता सबसे होनी चाहिए और शत्रुता किसी से भी नहीं, ऐसा ईश्वरीय ज्ञान कहता है। मित्रता और शत्रुता की नहीं जाती है बल्कि स्वभाव-संस्कार के अनुसार हो जाया करती है। मित्रता (प्रेम) आत्मा का मौलिक गुण है और शत्रुता (अहंकार) आत्मा का आरोपित विकार है। मित्रता अर्थात् बेहद की शुभ भावना व शुभ कामना।

आत्मा का स्वभाव है मित्रता का

मित्रता एक व्यापक, बहुआयामी, बहुउपयोगी व बहुप्रभावी गुण है जो कि किसी भी सम्बन्ध के बनने का प्रथम चरण है। जिस प्रकार कोई कार्य यदि बार-बार किया जाए तो आदत बनती है, उसी प्रकार किसी से यदि बार-बार मिला जाए तो मित्रता बनती है। यह मित्रता आगे चल कर पारिवारिक सम्बन्ध में या व्यवसायिक सम्बन्ध में या धार्मिक सहोदरता आदि में बदल जाती है। किसी मित्र से यदि 20-25 साल तक बिछड़ाव हो और अचानक मुलाकात हो जाए, तो मित्रता की खींच और भी बढ़ जाती है। इसके विपरीत यदि किसी शत्रु से 20-25 साल बाद मुलाकात हो, तो शत्रुता का भाव आधा भी नहीं रह जाता। ऐसा इसलिए, क्योंकि आत्मा का स्वभाव है ही मित्रता का, न कि शत्रुता का। आत्मा है शीतल जल के समान और ऐसा जल यदि गर्म (शत्रुता) हो गया हो, तो 20-25 मिनट के बाद इसका तापमान आधा भी नहीं रह जाता।

मित्रता में कोई छोटा-बड़ा नहीं

मित्रता की जननी प्रेम है। प्रेम सर्व से किया जा सकता है और मित्रता उन सभी से, जिनसे वैचारिक, वाचिक व स्थूल लेन-देन की जाती हो। जिस प्रकार प्रेम किसी भी सीमा में नहीं बंधता, उसी प्रकार विशुद्ध मित्रता भी छोटे-बड़े, ऊंच-नीच, अमीर-ग़रीब, स्त्री-पुरुष आदि की सीमा में नहीं बंधती। मित्रता तो दिलों का मेल है, न कि सामाजिक रुतबे का खेल। अत: यह कहावत कि मित्रता व शत्रुता बराबर वाले से ही करनी चाहिए, वैचारिक संकीर्णता है। मित्रता से तो छोटे-बड़े का भाव ही समाप्त हो जाता है अन्यथा इसे मित्रता कहा ही नहीं जा सकता।

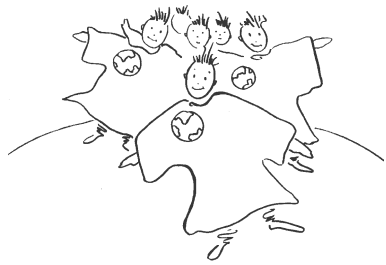

ईश्वरचंद्र विद्यासागर से मिलने उनका एक धनवान मित्र अपनी बहुमूल्य कार से जा रहा था। उसने जब रास्ते के किनारे एक छोटी-सी दुकान के बाहर ईश्वरचंद्र को दुकानदार के साथ खाट पर बैठे देखा तो कार रुकवा कर उन्हें आवाज़ लगाई। ईश्वरचंद्र उठ कर कार तक गए। वह धनवान बाहर निकल कर ईश्वरचंद्र से गले मिला। फिर उसने उलहना दिया कि आप ऐसे छोटे-से दुकानदार के साथ क्यों बैठे हो, क्या आपको अपनी प्रतिष्ठा का ज़रा भी ख्याल नहीं? ईश्वरचंद्र ने मुसकरा कर अपनी तरफ इशारा करके कहा कि आप इस छोटे व्यक्ति के साथ क्यों बैठते हो? उस धनवान मित्र ने खीजते हुए कहा कि आप तो मेरे मित्र हो और मित्रता में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। ईश्वरचंद्र ने दुकानदार की तरफ अंगूठा हिला कर, मुसकरा कर कहा

कि यही तो मैं भी कह रहा हूं कि मित्रता में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता।

मैत्रीभाव जीवन-यात्रा का ए.सी.टिकट है

आत्मा में सभी के प्रति मित्रता की संभावना बनी रहती है, बस ज़रूरत इस बात की है कि मनुष्यात्मा दूसरे के साथ थोड़ी देर बैठ कर बातें कर ले और आवश्यकता होने पर उसकी सहयोगी बने। यात्रा करते हुए सहयात्रियों के प्रति अव्यक्त प्रेम साक्षी भाव से मन में छाया रहता है। यह जीवन भी एक यात्रा है। मैत्रीभाव इस यात्रा का ए.सी. का टिकट है, अहंकार व उपेक्षा का भाव इस यात्रा का दूसरे दर्जे का टिकट है और शत्रुता का भाव रखना इस यात्रा का थर्ड-क्लास का टिकट है। ये सभी टिकट नि:शुल्क हैं परन्तु फिर भी ए.सी. का टिकट लेने वाले कम दिखाई पड़ते हैं।

एक शिशु और उसकी मां एक-दूसरे के मित्र होते हैं। मां शिशु से उसकी ही तोतली भाषा में बातें करती है, जो कि इस सिद्धान्त की पुष्टि करता है कि स्थाई मित्रता समान भाषा व विचारधारा वाले मनुष्यों में होती है। भाई का भाई से या बहन का बहन से या भाई व बहन का आपस में व्यवहार मित्रवत् होता है क्योंकि ये सम्बन्ध मित्रता की परिभाषा को संतुष्ट करते हैं। मानवीय-सम्बन्धों का यह सुखद पहलू है कि मित्र, भाई या बहन लगने लगते हैं और सगे भाई या बहन मित्र लगने लगते हैं।

पिता-पुत्र के सम्बन्ध के बारे में कहा जाता है कि जब बाप के जूते में बेटे का पैर फिट होने लगे तो बाप को बेटे से मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए। यहां तक कि एक दादा का अपने पोते से मित्रवत् व्यवहार होता है। एक पोता अपने दादा से उतना ही खुला हुआ होता है जितना कि वह अपने किसी घनिष्ठ मित्र से खुला होता है। पति-पत्नी केवल काम-चिता के साथी बन कर जीवन नहीं काट सकते। उनमें यदि मित्रता का सम्बन्ध न हो तो सम्बन्ध-विच्छेद (Divorce) की नौबत आ जाती है।

मित्रता में चाहिए प्रवाह और शत्रुता में ठहराव

कुदरत ने खारे जल को अलग से एक ही स्थान सागर में इकट्ठा कर दिया है। ऐसे सागर में हज़ारों मीठी नदियां अनादि काल से गिर रही हैं परन्तु अभी तक सागर को मीठा नहीं कर पाई हैं। नदियां पृथ्वी के भूखण्डों में बिखरी हुई हैं क्योंकि इनकी प्राणियों से मित्रता को देखते हुए ईश्वर ने इन्हें मानो बिखर जाओ का वरदान दिया हुआ है ताकि ये सभी का कल्याण कर सकें। परन्तु खारे सागरों को ईश्वर ने एक प्रकार से बसे रहो का वरदान दिया है ताकि ये एक ही स्थान पर अपने खारेपन को समेटे रहें। नदी का अपने बहाव की दिशा में भागते रहना व सागर का तटीय दिशा में लहरें पैदा करना इनके जल को ताज़ा रखता है। नदी का बहता जल वापस नहीं आता क्योंकि वह प्राणियों और फसलों का कल्याण करता है परन्तु सागर का जल किनारे तक जा कर वापस लौट जाता है क्योंकि ऐसे खारे जल को कोई स्वीकार नहीं करता। प्रवाह है जीवन और ठहराव है मृत्यु। तो मित्रता में होना चाहिए प्रवाह और शत्रुता में होना चाहिए ठहराव।

सूखे हैण्डपंप में सुबह पानी डाला जाता है और फिर वह सारा दिन पानी देता है। सूखे-रूखे स्वभाव वाले मनुष्य पर यदि प्रेम का पानी डाला जाए तो वह भी प्रेम ही देने लगता है। सच्ची मित्रता तो मन-मयूर को नृत्य जैसा सुख प्रदान करती है। मयूर तब ही नृत्य कर पाता है जब वह सभी प्राणियों व प्रकृति के प्रति प्रेम विभोर होता है। सतयुगी मनुष्य सदा प्रेम-विभोर रहते हैं। सतयुग में मित्रता के स्थान पर बंधुत्व हुआ करता है। बंधु अर्थात् स्वजन, नातेदार। सतयुग में सभी स्वजन होते हैं व सभी का आपस में मनुष्यता का नाता होता है। मित्रता कहना इसके उल्टे अर्थ शत्रुता का भी बोध कराता है परन्तु बंधुत्व का उल्टा होता नहीं है।

(क्रमश:)

नहीं भूलेगा बाबा वो तेरा प्यार

❊ ब्रह्माकुमार प्रेम, डेराबस्सी

बात सितंबर, 1971 की है, मैं और मेरे दादाजी खेतों में काम कर रहे थे। काम करते-करते हमारी चर्चा भविष्य में होने वाली घटनाओं पर होने लगी। मैंने दादाजी से पूछा कि यह कैसे पता लग जाता है कि किस तारीख को चन्द्रग्रहण लगेगा और किस तारीख को सूर्यग्रहण लगेगा। भगवान के कार्यों के बारे में दुनिया को कैसे पता चलता है कि क्या होने वाला है (तब तो हम सूर्यग्रहण आदि को भगवान का कार्य मानते थे, प्रकृति का कार्य है, यह समझ नहीं थी)? मेरे दादाजी ने बताया कि सुना है, मधुबन नाम की कोई जगह है, वहाँ पहाड़ हैं, उन पहाड़ों पर आसमान से एक पत्र गिरता है। उस पत्र को वहाँ रहने वाले ब्राह्मण ही पढ़ते हैं तथा समझते हैं, वे ही फिर दुनिया को बताते हैं कि क्या होने वाला है (दादाजी ने प्रचलित मान्यता सुनाई)। दादाजी की यह बात सुनकर मेरे मन में अनेक विचार जन्म लेने लगे कि यह मधुबन कहां होगा, वहां कैसे जाया जायेगा। कई साधुओं, पंडितों, कथावाचकों से पूछा परन्तु किसी ने भी कुछ नहीं बताया। आखिर निराश होकर रह गया परन्तु मधुबन मेरे दिमाग में से न निकल सका।

मधुबन नाम सुनते ही रोम-रोम खिल गया

सितम्बर, 1972 में एक दिन दोपहर को मैं अपने खेत में बैठा था तो अचानक मेरा एक दोस्त आया। उसने मुझे बताया कि परमपिता परमात्मा परमधाम से सृष्टि में आ चुके हैं और नई सतयुगी, सुख-शान्तिमय सृष्टि कैसे बनेगी, यह ज्ञान दे रहे हैं। भाई ने बताया कि परमपिता परमात्मा तो निराकार हैं अत: वे प्रजापिता ब्रह्मा के तन में, मधुबन में आकर यह ज्ञान देते हैं जिसके द्वारा मनुष्य देवता बन जाता है तथा सृष्टि पावन स्वर्ग बन जाती है। बस फिर क्या था, मधुबन का नाम सुनते ही मेरा तो रोम-रोम खिल गया। मधुबन का नाम सुनते ही जो आनंद मिला उसे वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। इसके बाद मैं स्थानीय ईश्वरीय पाठशाला से जुड़ गया और वहाँ बाबा के महावाक्य (मुरली) सुनकर प्यारे बाबा पर मुझे पूरा निश्चय हो गया और मैं उसी दिन से बाबा का सच्चा और पक्का बच्चा बन गया।

बुखार ने ली परीक्षा

फिर मैं घर में भी ज्ञान सुनाने लगा। मेरे माताजी, बहनें तथा भाई भी गीता पाठशाला में जाने लगे। अब एक ही

इच्छा सताने लगी कि कब मैं मधुबन में जाकर बाबा को वाणी चलाते हुए सम्मुख देखूँ। पहले नियम बहुत कड़े थे। जब तक दो साल से सम्पूर्ण धारणा न हो तो मधुबन जा नहीं सकते थे। मेरा छोटा भाई कुमार था तो वह 1973 में बाबा से मिलकर आया। मैं भी बाबा से मिलने की इच्छा से सदा व्याकुल रहता था। आखिर इन्तजार का समय खत्म हुआ। मैं चन्डीगढ़ की पार्टी के साथ अपने 5000 वर्ष से बिछुड़े हुए पिता से मिलन मनाने की इच्छा से 11 सितम्बर, 1974 को अपने प्यारे-प्यारे मधुबन में पहुँच गया। उस समय पार्टी छोटी होती थी, अपना बिस्तर भी साथ ही लेकर जाया करते थे। हमें पांडव भवन में गेट के पास जो साहित्य का स्टाल है उसके ऊपर चौबारे में ठहराया गया। ज़िन्दगी में पहली बार इतनी लम्बी यात्रा की

थी, जिसके कारण मुझे रात को बुखार हो गया। दो दिन बुखार में बुरा हाल रहा। हमारे साथ चण्डीगढ़ के भाई डॉ.त्रिखा जी थे उन्होंने मुझे दवाई दी और कहा कि आप चारपाई से उठना नहीं। शाम का समय हो गया और बुखार उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था। हमारी इन्चार्ज बहन अचल जी ने फिर मुझे दवाई दिलाई। डॉ.साहब ने कहा, इसे आराम की बहुत ज़रूरत है अत: इसके पास किसी भाई को बैठा दो जो इसे उठने न दे। अचल दीदी ने भाई इन्द्रजीत को मेरे पास बैठा दिया। आखिर बाबा के आने का समय होने लगा। मैं आंखें बन्द कर लेटा था, वह भाई चुपके से बाहर से कुण्डी लगाकर बाबा से मिलने मेडिटेशन हाल में चला गया।

बाबा से सात मिनट वार्तालाप

जब आंखें खुली तो देखा, वहां कोई नहीं था। मैं दरवाज़ा खोलने लगा परन्तु वह तो बाहर से बन्द था। मैं रोने लगा कि जिस दृश्य को देखने के लिए मैं कब से बिन पानी की मछली की तरह तड़प रहा था, आज वह इच्छा पूरी होने वाली थी परन्तु जाने मैं कितना पापी हूँ जो सागर के किनारे भी प्यासा मर रहा हूँ। मैं शिवबाबा को पुकारने लगा, बाबा, अगर मैं इतना पापी था तो मुझे अपना परिचय दिया क्यों? क्या आप मुझे बिना मिले ही वापिस भेज देंगे। बाबा, मैं आपसे बिना मिले चला गया तो ट्रेन से छलांग लगाकर जान दे दूंगा। मैं दरवाजे के पास बैठकर रोता रहा। अचानक मुझे आभास हुआ कि किसी ने मेरा हाथ पकड़ा है परन्तु कुछ दिखाई नहीं दिया। जब मैं चारपाई पर लेट गया तो मैंने देखा कि ब्रह्मा बाबा मेरे सिरहाने बैठे हैं, मेरे सिर को गोदी में रख धीरे-धीरे दबा रहे हैं और कह रहे हैं, मेरे सिकीलधे बच्चे, तुम्हें मिलने के लिये तो मैं परमधाम से आया हूँ, तूने यह कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हें नहीं मिलूँगा। मैंने बाबा को ज़ोर से पकड़ लिया और उनकी गोदी में समा गया। मेरी आंखों से प्यार के जो आंसू निकले उनसे मेरा सारा तकिया भीग गया। उस प्यार के सागर के प्यार में मैं इतना डूब गया कि मुझे कोई सुधबुध नहीं रही। थोड़ी देर के बाद बाबा मेरा सिर अपनी गोदी से हटाकर चले गए, मैं देखता ही रह गया।

इसके बाद बाहर जाने की कोशिश में दरवाजे से टकराकर गिर गया और अचेत हो गया। भाइयों ने आकर मुझे चारपाई पर लिटाया। सुबह जब मैं उठा तो एकदम तंदुरुस्त था। पन्द्रह तारीख को फिर बाबा आये। मैं तो सबसे पहले और सबसे आगे मेडिटेशन हाल में बैठ गया। जब बाबा आये तो सबसे पहले मिलने वालों में मैं ही था। बाबा ने पूछा, बच्चे, अब कैसे हो? मैंने कहा, अब ठीक हूँ बाबा। बाबा ने घर-परिवार सभी के बारे में पूछा। मैं कितनी सौभाग्यशाली आत्मा हूँ जिसने संसार के मालिक परमपिता परमात्मा से सम्मुख 7 मिनट तक वार्तालाप किया। क्या मुझसे बड़ा सौभाग्यशाली भी कोई हो सकता है!

विशेष सूचना

ग्लोबल अस्पताल माउण्ट आबू, आबू रोड तथा एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज, आबू रोड में आवश्यकता है –

1. रजिस्ट्रार ऑप्थोलमॉलॉजि (Registrar, Opthalmology)
2. आयुर्वेदा स्पेशलिस्ट (Ayurveda Specialist)
3. मेडिकल ऑफिसर (Medical Officer for mobile clinic)
4. क्लिनिकल इन्स्ट्रक्टर (Clinical Instructor)
5. आफिस असिस्टेन्ट (Office Assistant)

इच्छुक बी.के.भाई-बहनें संपर्क करें :

फोन नं.09414144062

ई-मेल: ghrchrd@ymail.com

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1.**ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** व्यापार तथा उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, ब्र.कु.योगिनी बहन, ब्र.कु.गीता बहन, उद्योगपति ब्र.कु.मदनलाल शर्मा, थर्मो ग्रुप हैदराबाद की निदेशिका बहन उमा, भाता प्रभु किशोर तथा अन्य। 2.**ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** महिला प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, पद्म विभूषण डा.सोनल मानसिंह, पंजाब महिला आयोग अध्यक्षा बहन परमजीत कौर, ब्र.कु.डॉ.सविता बहन तथा अन्य। 3.**धुलिया (अशोकनगर)-** पूर्व राष्ट्रपति बहन प्रतिभा पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रमिला बहन तथा ब्र.कु.कमल बहन। 4.**इम्फाल (मणिपुर)-** मणिपुर विधानसभा अध्यक्ष भाता टी.लोकेश्वर सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई। 5.**अहमदनगर-** उपभोक्ता मामले, खाद्यान्न तथा जन आपूर्ति राज्यमन्त्री भाता राव साहेब दानवे को 100 प्रकार के फूलों के गुलदस्ते द्वारा "भगवान धरती पर आ गए है" का संदेश देते हुए ब्र.कु.राजेश्वरी बहन तथा ब्र.कु.दीपक भाई। 6.**राऊरकेला-** केन्द्रीय आदिवासी मंत्री भाता जुएल ओराम को पुष्पगुच्छ से सम्मानित करते हुए ब्र.कु.विमला बहन। 7.**पन्ना-** म.प्र.की महिला, बाल विकास एव सामाजिक न्याय मंत्री बहन कुसुम सिंह महदेले को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.सीता बहन उनके साथ। 8.**ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** खेल प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु.शशि बहन, अन्तर्राष्ट्रीय हाकी खिलाड़ी भाता धनजय महाधिक, ब्र.कु.डॉ.बसवराज, अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी रज़िया शेख, ब्र.कु.जगबीर भाई तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month & Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : August 2014.

रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर

दादी जानकी जी का दिव्य सन्देश

विश्व रक्षक परमात्मा पिता के ज्ञान, गुण और सर्वशक्तियों रूपी छत्रछाया में सदा सुरक्षित रहने वाले सर्व भाई-बहनें,

आप सबको पावन पर्व रक्षा बन्धन तथा जन्माष्टमी की कोटि-कोटि बधाइयाँ

विश्वपिता के हम सब विश्व भर के रूहानी बच्चे आपस में भाई-भाई हैं। बुराइयों से हम सबकी रक्षा करने वाला, ईश्वरीय स्नेह से एकता के सूत्र में पिरोने वाला, निश्छल स्नेह और खुशी की खुराक द्वारा स्वस्थ बनाने वाला यह प्यारा रक्षा-बन्धन पर्व हम सबके लिए अमूल्य ईश्वरीय उपहार है।

परमात्मा पिता की दिव्य शिक्षाओं की धारणा से हम अपनी दृष्टि, वृत्ति, कृति, वाणी, व्यवहार और स्वप्नों को भी सम्पूर्ण पवित्र बनाएँ, यही इस पर्व का पावन सन्देश है।

दिल की शुभकामना है कि समय की पुकार को सुनते हुए, रहमदिल बनकर 'पवित्र भव, योगी भव' के ईश्वरीय सन्देश को धारण करने के दृढ़ संकल्प के साथ इस रक्षा-सूत्र को कलाई पर बाँधें। मधुर बोल की अविनाशी मिठाई एक-दो को खिलाएँ और मस्तक पर आत्म-स्वरूप में टिकने का टीका लगाएँ। पवित्रता, मधुरता और दृढ़ता की इन धारणाओं से सदा खुशनसीब बन जाएँगे।